हमारे **ई-पेपर** को पढ़ने के लिए इस **QR कोड को स्कैन करें**

हमारे दैनिक खबरों को **डिजिटल माध्यम** में देखने के लिए इस **QR कोड को स्कैन करें**

ठीहा छत्तीसगढ़

समस्या से समाधान तक

वर्ष-01 | अंक-01 | पाक्षिक | 01 से 15 अगस्त 2026 | मूल्य : 20 | पृष्ठ- 12

हरेली तिहार: मुख्यमंत्री निवास में उतरा गांव का रंग

सीएम बोले- हरेली प्रकृति, पशुधन और किसानों के प्रति कृतज्ञता का तिहार है

छत्तीसगढ़ का पहला लोक पर्व हरेली 12 अगस्त दिन बुधवार को नवा रायपुर स्थित मुख्यमंत्री निवास में धूमधाम से मनाया गया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय पारंपरिक छत्तीसगढ़ी वेशभूषा में विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह के साथ पिंक ऑटो से कार्यक्रम स्थल पहुंचे। कार्यक्रम की शुरुआत गौरी-गणेश और नवग्रह पूजन से हुई, जिसके बाद मुख्यमंत्री ने शिवलिंग का विधि-विधान से अभिषेक किया।पूजा-पाठ के दौरान मुख्यमंत्री ने नांगर, रापा, कुदाल और फावड़ा सहित खेती में उपयोग होने वाले औजारों की पूजा-अर्चना की। इसके बाद वे मुख्यमंत्री निवास परिसर स्थित गौशाला पहुंचे, जहां उन्होंने गौमाता की आरती की और गाय-बछड़े को हरा चारा, चना-गुड़ व पारंपरिक लोंदी खिलाई। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि हरेली छत्तीसगढ़ की कृषि परंपरा, प्रकृति और ग्रामीण जीवन के बीच के रिश्ते का पर्व है। उन्होंने कहा कि किसान अपने खेतों, औजारों और पशुधन के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए यह पर्व मनाते हैं। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि और अच्छी फसल की कामना की।

पौधरोपण और कृषि योजनाओं का जिक्र

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष ने परिसर में पारिजात का पौधा लगाया।

मंत्रियों और अन्य पदाधिकारियों ने भी पौधारोपण किया। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में सहकारी कृषि ऋण को शून्य प्रतिशत ब्याज दर तक लाए जाने और राज्य सरकार द्वारा 3,100 रुपए प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी का उल्लेख किया।

कार्यक्रम में किसान इंद्र कुमार वर्मा को हार्वेस्टर सब्सिडी के तहत 16 लाख रुपए का चेक सौंपा गया। ड्रोन दीदी चंद्रकली वर्मा से मुख्यमंत्री ने संवाद किया, जिन्होंने बताया कि वे ड्रोन से खेतों में छिड़काव कर प्रति एकड़ 300 रुपए कमाती हैं और अब तक ढाई हजार एकड़ से अधिक क्षेत्र में काम कर चुकी हैं।

कलाकारों ने किया प्रदर्शन

कार्यक्रम स्थल को पारंपरिक छत्तीसगढ़ी रंग-रूप में सजाया गया था, जहां ग्रामीण परिधान पहने अतिथि, कलाकार और आमजन लोक संस्कृति में रमे नजर आए। हरेली उत्सव के दौरान मुख्यमंत्री निवास में परम्परागत और आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रदर्शन किया गया। मुख्यमंत्री ने प्रदर्शनी स्थल का भ्रमण कर विभिन्न पारंपरिक यंत्रों और वस्तुओं का अवलोकन किया।

प्रदर्शनी में गेड़ी, बिल्लस, गोटी, बाटी जैसे पारंपरिक खेल और कृषि उपकरण प्रदर्शित किए गए। कृषि विभाग द्वारा आयोजित आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी में नांगर, कुदाली, फावड़ा, रोटावेटर, बीज ड्रिल, पावर टिलर और स्प्रेयर जैसे यंत्र शामिल थे।

मांदर और ढोलक की थाप पर लोक कलाकारों ने छत्तीसगढ़ी गीत-नृत्य प्रस्तुत किए। ठेठरी, खुरमी, बड़ा सहित पारंपरिक व्यंजनों के स्टॉल भी कार्यक्रम में लगाए गए थे।

इस मौके पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने कहा कि हरेली छत्तीसगढ़ की कृषि परंपरा और संस्कृति से जुड़ा पर्व है और किसानों को धान का उचित मूल्य मिलने से गांव मजबूत हो रहे हैं। कृषि मंत्री रामविचार नेताम ने कहा कि यह पर्व खेती-किसानी और प्रकृति के प्रति आस्था का प्रतीक है।

कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े, राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा, स्कूल शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव, कौशल विकास मंत्री गुरु खुशवंत साहेब सहित विधायकगण, निगम-मंडल के पदाधिकारी, विभिन्न जिलों से आए किसान और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

हरेली पर उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने की गौमाता व कृषि औजारों की पूजा
मंत्री टंकराम वर्मा के नवीन आवास में हुआ गृह प्रवेश

रायपुर। छत्तीसगढ़ का पहला लोकपर्व हरेली आज प्रदेशभर में पारंपरिक उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने नवा रायपुर स्थित अपने शासकीय निवास में गौमाता एवं कृषि औजारों नांगर, गैती, कुदारी आदि की विधिवत पूजा-अर्चना की। उन्होंने घर के प्रवेश द्वार पर नीम की डाली लगाकर प्रदेश में अच्छी बारिश, भरपूर फसल, खुशहाली और समृद्धि की कामना की।

इसी अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय नवा रायपुर में राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा के नवीन शासकीय आवास के गृह प्रवेश समारोह एवं हरेली उत्सव में शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने टंकराम वर्मा एवं उनके परिजनों को गृह प्रवेश और हरेली की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि हरेली कृषि संस्कृति, प्रकृति और ग्रामीण जीवन से गहराई से जुड़ा पर्व है तथा किसान छत्तीसगढ़ की प्रगति की धुरी हैं। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह सहित अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बंगले पर भी मना हरेली, परिवार संग की पूजा-अर्चना

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बंगले पर भी हरेली तिहार धूमधाम से मनाया गया। उन्होंने पत्नी और परिवार के साथ कृषि औजारों की पूजा-अर्चना कर अच्छी फसल की कामना की और गौमाता की आरती कर उन्हें लोंदी खिलाई। बंगले को नीम के पत्तों और गेंदे के फूलों से सजाया गया था। कार्यक्रम में कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता, पूर्व मंत्री, विधायक और कार्यकर्ता शामिल हुए।

इस दौरान लोक कलाकारों ने छत्तीसगढ़ी गीतों पर पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किए। पूर्व मुख्यमंत्री बघेल खुद गेड़ी पर चढ़े और हाथ पर लट्टू भी नचाया। कार्यक्रम में चिल्ला और फरा सहित छत्तीसगढ़ी पकवानों का भी आयोजन किया गया था।

छत्तीसगढ़ का पहला त्यौहार हरेली

छत्तीसगढ़ का पहला लोक पारंपरिक पर्व हरेली माना जाता है। इसे लेकर पूरे प्रदेश में विशेष तैयारियां की जाती हैं। हरेली त्यौहार हर साल सावन महीने की अमावस्या तिथि को मनाया जाता है। मान्यता है कि इस समय तक किसान धान की रोपाई जैसे कृषि कार्य पूरे कर लेते हैं। हरेली छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक और कृषि परंपरा से जुड़ा प्रमुख लोकपर्व है।

हरेली में निरोग रहने की मान्यता

हरेली त्यौहार पर किसान और ग्रामीण अपने पशुधन की पूजा करते हैं। किसान इस दिन अपने उपयोग में आने वाले कृषि औजार जैसे हल (नांगर), फावड़ा (रापा), जुड़ा-दतारी, कुदारी, बसला और टंगिया (कुल्हाड़ी) को साफ करके धोते हैं। इसके बाद घर के आंगन में इनकी पूजा की जाती है। कृषि औजारों को नारियल और गुड़ के चीले का भोग लगाया जाता है। गांवों में ठाकुरदेव की भी पूजा की जाती है।

हरेली त्यौहार में किसान और पशुपालक अपने पशुधन को गौठान में ले जाकर गेहूं के आटे से बनी लोंदी खिलाते हैं। इसके पीछे पशुओं के स्वस्थ और निरोग रहने की मान्यता जुड़ी हुई है। वापस लौटते समय यादव समाज के लोग जंगल से लाए गए कंदमूल (दशमूल कंद) किसानों को देते हैं। इसे गांव के लोग प्रसाद के रूप में खाते हैं। मान्यता है कि जंगली कंदमूल खाने से शरीर स्वस्थ रहता है।

पशुधन की पूजा और विशेष आयोजन

प्रदेश के किसान हरेली त्यौहार को धूमधाम से मनाते हैं। इस अवसर पर बैलों को सजाया जाता है और पशुधन की पूजा की जाती है। किसानों के जीवन में पशुओं का विशेष महत्व होने के कारण उनके सम्मान में कई तरह के आयोजन किए जाते हैं। इन आयोजनों में छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति और ग्रामीण परंपराओं की झलक देखने को मिलती है।

गेड़ी में छूपा है जीवन का संदेश

छत्तीसगढ़ के हरेली तिहार पर बांस से बनाई जाने वाली 'गेड़ी' हमे जीवन में संतुलन, आत्मविश्वास, और अपनी समृद्ध लोक-संस्कृति व प्रकृति से जुड़े रहने का संदेश देती है। यह जमीन से ऊपर उठकर आगे बढ़ने, कठिनाइयों में भी तालमेल बनाएं रखने और अपनी मिट्टी की परंपराओं को सहेजने की प्रेरणा देती है।

हरेली त्यौहार से कई दिन पहले ही घरों में गेड़ी तैयार होने लगती है। गेड़ी पर चलना आसान नहीं होता। इसके लिए पैरों और शरीर का पूरा संतुलन जरूरी है। इससे यह संदेश मिलता है कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए संतुलन और संयम का होना बहुत जरूरी है। ऊंचे बांस पर चढ़कर जब बच्चें और युवा चलते हैं, तो उनका डर दूर होता है। यह

कठिनाइयों का सामना करने और खुद पर भरोसा रखने का प्रतीक है।

हरेली के दिन महिलाएं घरों में विभिन्न छत्तीसगढ़िया व्यंजन बनाती हैं। इनमें गुरहा चीला(गुड़ का चीला), बरा(बड़ा), सोहारी(पुड़ी) और गुलगुला भजिया प्रमुख हैं। हरेली त्यौहार के दिन बच्चें और युवा बांस से बनी गेड़ी पर चढ़कर चलते हैं। बच्चें-बूढ़े-जवान-किसान सभी के लिए यह पर्व विशेष उत्साह और आनंद लेकर आता है।

नीम की पत्तियां लगाने की परंपरा

हरेली त्यौहार के दिन यादव समाज के लोग घरों के मुख्य दरवाजे पर नीम की डाल लटकाते हैं। इसके पीछे नकारात्मक ऊर्जा को दूर रखने और घर को कीटाणुओं तथा बीमारियों से बचाने की पारंपरिक मान्यता जुड़ी हुई है।हरेली को छत्तीसगढ़ का पहला त्यौहार भी कहा जाता है। मान्यता है कि इसी पर्व के साथ प्रदेश के सभी पारंपरिक त्यौहारों की शुरुआत होती है। इसलिए ग्रामीण अंचलों में हरेली का विशेष सांस्कृतिक महत्व है।

अंधविश्वास से भी जुड़ी मान्यताएं

हरेली का अर्थ हरियाली से भी जोड़ा जाता है। यह पर्व मुख्य रूप से किसान, खेती और पशुधन से जुड़ी परंपराओं का प्रतीक है। हालांकि हरेली को लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ अंधविश्वास भी प्रचलित रहे हैं। कुछ स्थानों पर यह मान्यता है कि हरेली की रात जादू-टोना और टोनही से जुड़ी गतिविधियां होती हैं। हालांकि ऐसी मान्यताओं का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है और कई सामाजिक संगठन तथा जागरूक लोग इनके खिलाफ लोगों को जागरूक करते हैं।

स्वामी-श्रीराम डिजिटल, प्रकाशक एवं मुद्रक- देवानंद द्वारा ए. आर प्रिंटर्स, बी-1, रेमण्ड शोरूम के सामने, शिवम मार्केट, पंडरी, रायपुर, जिला- रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित कर 875 महावीर कटपीस के सामने, बैजनाथपारा, रायपुर, जिला- रायपुर, छत्तीसगढ़, पिन नंबर- 492001 से प्रकाशित। RNI No.- CTMUL/26/A5959, संपादक- **देवानंद**, मोबाइल नंबर- 99269 33309

छत्तीसगढ़ का खूबसूरत दल्हा पहाड़ आस्था, रोमांच और प्रकृति का अद्भुत संगम

राकेश निर्मलकर
संवाददाता, रायपुर

वैसे तो छत्तीसगढ़ में घूमने लायक बहुत सी रोमांचक जगह है। इनमें जांजगीर-चांपा जिले का दल्हा पहाड़ आस्था और रोमांच का एक अनूठा संगम प्रस्तुत करता है। जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर अकलतरा तहसील के दल्हापोड़ी गांव में स्थित यह पहाड़ अपनी प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक मान्यताओं के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। लगभग 700 मीटर ऊंचे इस पहाड़ की चोटी से चारों ओर का विहंगम दृश्य देखने और प्रकृति के इस खूबसूरत नजारे का आनंद लेने के लिए सैलानी यहां खिंचे चले आते हैं।

आस्था का केंद्र और चमत्कारी सूर्यकुंड

दल्हा पहाड़ पर मुख्य रूप से नागपंचमी के अवसर पर विशाल मेले का आयोजन होता है, इस बार नागपंचमी 17 अगस्त, सोमवार को पड़ रही है। यहां स्थित मुनि का आश्रम और 'सूर्यकुंड' श्रद्धालुओं के बीच विशेष आकर्षण का केंद्र हैं। मान्यता है कि सूर्यकुंड का जल बारहों महीने अमृत के समान रहता है। स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं का अटूट विश्वास है कि नागपंचमी के दिन इस कुंड का जल पीने से स्वास्थ्य उत्तम रहता है और कई तरह की बीमारी से मुक्ति मिल जाती है।

ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए बेहद रोमांचित करने वाला सफर

इस पहाड़ की चोटी तक पहुंचने का सफर अपने आप में एक बड़ा रोमांच है। यदि आप यहां आ रहे हैं, तो आपको नैसर्गिक चट्टानों को पार करते हुए आगे बढ़ना पड़ेगा, जो ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए बेहद रोमांचित करने वाला अनुभव है। जंगल के रास्तों, कंटीले पौधों और पथरीली चट्टानों को पार करके ही शिखर तक लंबा सफर तय करना होता है, क्योंकि यहां न तो कोई सीढ़ियां हैं और न ही चढ़ाई के लिए कोई पक्का रास्ता। पहाड़ के चारों ओर कोटगढ़, पचरी, पंडरिया और पोड़ी गांव बसे हुए हैं। दिलचस्प बात यह है कि इस जंगली रास्ते में सांप भी रहते हैं, लेकिन ट्रैकिंग के शौकीन और श्रद्धालु आम दिनों में भी इस यात्रा का मोह नहीं छोड़ते।

सूर्यकुंड

नागपंचमी का विशाल मेला और चमत्कारी कुंड

दल्हा पहाड़ पर आस्था का सबसे बड़ा सैलाब नागपंचमी के दिन उमड़ता है। इस विशेष अवसर पर यहां एक विशाल मेले का आयोजन होता है, जिसमें शामिल होने के लिए केवल छत्तीसगढ़ से ही नहीं, बल्कि दूसरे राज्यों से भी हजारों की संख्या में श्रद्धालु दूर-दूर से आते हैं। पहाड़ के ठीक नीचे एक प्राचीन ऋषि आश्रम स्थित है, जो लोगों की अगाध श्रद्धा का केंद्र है। इसी आश्रम के पास एक पवित्र सूर्यकुंड मौजूद है। इस कुंड की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसका पानी कभी नहीं सूखता, चाहे कितनी भी भीषण गर्मी क्यों न हो। श्रद्धालुओं का यह अटूट विश्वास है कि नागपंचमी के दिन इस कुंड का पवित्र जल पीने से अद्भुत स्वास्थ्य लाभ होता है और शरीर की हर तरह की बीमारी दूर हो जाती है।

शिखर का सुन्दर दृश्य और मानसून का जादू

जब दुर्गम रास्तों से होकर आप पहाड़ की चोटी पर पहुंचते हैं, तो वहां पहुंचने के बाद चारों तरफ दूर-दूर का खूबसूरत दृश्य देखकर सारी थकान मानो मिट सी जाती है। मानसून के समय जब बादल पहाड़ से टकराते हैं, तो वह पल लोगों के लिए किसी फिल्म के सीन से कम नहीं होता। प्रकृति का यह अद्भुत रूप हर किसी को मंत्रमुग्ध कर देता है।

यहां आने वालों के लिए विशेष सलाह

यह जगह जितनी सुंदर है, उतनी ही खतरनाक भी है क्योंकि थोड़ी सी चूक जीवन पर भारी पड़ सकती है। पहाड़ की दुर्गम चढ़ाई को देखते हुए अपनी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना जरूरी हो जाता है।

पहनावा और जूते: ट्रैकिंग के दौरान टाइट कपड़े न पहनें, आरामदायक कपड़े चुनें। हमेशा जूता पहनकर आएं जिससे चढ़ने में आसानी होगी। चप्पल बिल्कुल न पहनें क्योंकि रास्तों में बेहद ढलान है और इससे फिसलने या चोट लगने की दिक्कत हो सकती है।

पानी साथ रखें: ऊंचाई पर चढ़ते वक्त प्यास बहुत लगती है, इसलिए अपने साथ भरपूर पानी रखें। यदि दो लोग जा रहे हैं, तो कम से कम दो लीटर पानी अपने साथ अवश्य रखें।

सामान कम रखें: पहाड़ पर चढ़ते समय अपने साथ ज्यादा सामान न रखें। भारी सामान के साथ इतनी ऊंचाई चढ़ने में आपको ज्यादा थकान लग सकती है और सफर मुश्किल हो सकता है।

कैसे पहुंचें दल्हा पहाड़?

दल्हा पहाड़ पहुंचने के लिए यातायात के अच्छे साधन उपलब्ध हैं।

ट्रेन द्वारा: सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन अकलतरा है। यहां से बलौदा मार्ग पर मात्र 7 किलोमीटर की दूरी तय करके दल्हापोड़ी गांव स्थित पहाड़ तक पहुंचा जा सकता है।

सड़क मार्ग द्वारा: सड़क मार्ग से आप जांजगीर-चांपा जिला मुख्यालय से अकलतरा होते हुए (लगभग 25 किलोमीटर की दूरी) यहां आ सकते हैं। इसके अलावा, आप बिलासपुर से अकलतरा होकर भी दल्हा पहाड़ आसानी से पहुंच सकते हैं।

करोड़ों की सड़क सुरक्षा योजना पर लापरवाही! रायपुर की सड़कों से गायब हो रही डिवाइडर रेलिंग हादसों का बढ़ा खतरा

रायपुर। राजधानी रायपुर में सड़क सुरक्षा को मजबूत बनाने के उद्देश्य से करोड़ों रुपये खर्च कर डिवाइडरों के बीच लगाई गई लोहे की रेलिंग अब धीरे-धीरे गायब होती जा रही हैं। कई स्थानों पर रेलिंग टूटी हुई है, जबकि कई जगहों से पूरी तरह से हट चुकी है या चोरी हो गई है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि शहर के वीआईपी क्षेत्रों और मंत्रियों के बंगलों के आसपास भी रेलिंग गायब दिखाई दे रही है, जिससे रखरखाव व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं।

शहरी सड़क सुरक्षा एवं यातायात सुगमतीकरण योजनाओं के तहत स्थानीय नगर निगम और लोक निर्माण विभाग (PWD) द्वारा इन रेलिंग की स्थापना की गई थी। इनका मुख्य उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं को कम करना, वाहनों की अनियंत्रित आवाजाही रोकना तथा पैदल यात्रियों को निर्धारित स्थानों से ही सड़क पार करने के लिए प्रेरित करना था। लेकिन समय पर रखरखाव नहीं होने और सुरक्षा व्यवस्था कमजोर पड़ने से करोड़ों रुपये की यह योजना धीरे-धीरे अपनी उपयोगिता खोती नजर आ रही है।

रेलिंग गायब होने के कारण कई स्थानों पर लोग सीधे डिवाइडर पार कर सड़क पार कर रहे हैं, जिससे तेज रफ्तार वाहनों के बीच दुर्घटनाओं की आशंका बढ़ गई है। वहीं, क्षतिग्रस्त डिवाइडर शहर की सुंदरता और यातायात व्यवस्था दोनों को प्रभावित कर रहे हैं। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि यदि समय रहते इन रेलिंग की मरम्मत और रेलिंग को लगाई नहीं गई तो भविष्य में गंभीर सड़क हादसे हो सकते हैं।

शहरवासियों का यह भी कहना है कि जब वीआईपी इलाकों में ही सड़क सुरक्षा संबंधी संरचनाओं का यह हाल है, तो अन्य क्षेत्रों की स्थिति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि करोड़ों रुपये खर्च कर बनाई गई सड़क सुरक्षा परियोजनाओं की निगरानी और रखरखाव की जिम्मेदारी आखिर किसकी है?

अब नागरिकों की मांग है कि नगर निगम, लोक निर्माण विभाग और संबंधित एजेंसियां संयुक्त रूप से शहरभर का सर्वे कर गायब एवं क्षतिग्रस्त रेलिंग को तत्काल बदलें, चोरी की घटनाओं की जांच कर जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई करें तथा सड़क सुरक्षा व्यवस्था को दोबारा मजबूत बनाएं।

सबसे बड़ा सवाल यही है- जब सड़क सुरक्षा से जुड़ी संरचनाएं ही लापरवाही की भेंट चढ़ रही हैं, तो आखिर जिम्मेदार अधिकारी कब जागेंगे?

छत्तीसगढ़ में AI क्रांति की शुरुआत: मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में राज्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मिशन को मिली मंजूरी

रायपुर। छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य को डिजिटल और तकनीकी रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में छत्तीसगढ़ राज्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) मिशन को मंजूरी प्रदान की गई। इस महत्वाकांक्षी मिशन का उद्देश्य राज्य में सुशासन को और अधिक प्रभावी बनाना, नई तकनीकों को बढ़ावा देना, युवाओं के लिए कौशल विकास के अवसर बढ़ाना तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था को नई गति देना है।

सरकार का मानना है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से विभिन्न विभागों की कार्यप्रणाली अधिक पारदर्शी, तेज और नागरिक-केंद्रित बनेगी। इससे सरकारी सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा और आम जनता को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकेंगी।

AI मिशन के तहत युवाओं को आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण देने, स्टार्टअप और नवाचार को प्रोत्साहित करने तथा उद्योगों में नई तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया जाएगा। इससे रोजगार के नए अवसर सृजित होने के साथ-साथ राज्य की डिजिटल अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह मिशन छत्तीसगढ़ को तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में नई पहचान दिलाने के साथ-साथ भविष्य की डिजिटल चुनौतियों के लिए भी तैयार करेगा। सरकार की यह पहल शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग और प्रशासन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में AI आधारित समाधान विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

राज्य सरकार का लक्ष्य है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग केवल तकनीकी विकास तक सीमित न रहे, बल्कि इसका लाभ आम नागरिकों तक पहुंचे और छत्तीसगढ़ डिजिटल परिवर्तन के नए दौर में अग्रणी राज्यों की श्रेणी में शामिल हो सके।

भाजपा-कांग्रेस दोनों में गुटबाजी हावी, संगठन के भीतर घमासान तेज

निकाय-पंचायत चुनावों की दस्तक के बीच दोनों प्रमुख दलों में आंतरिक खींचतान खुलकर सामने आई, जनहित के मुद्दे पीछे छूटे

रायपुर से विशेष रिपोर्ट

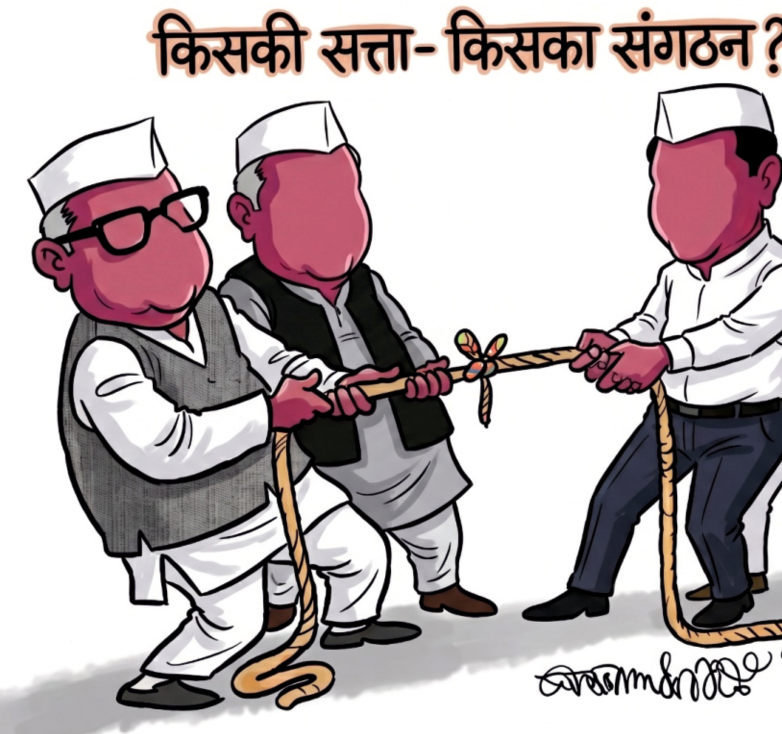

छत्तीसगढ़ की राजनीति में इन दिनों जनसरोकार के मुद्दों से कहीं ज्यादा चर्चा दोनों बड़े दलों- सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी और विपक्षी कांग्रेस- के भीतर चल रही खींचतान की हो रही है। बीते कुछ महीनों में दोनों ही संगठनों के भीतर गुटबाजी की परतें खुलकर सामने आने लगी हैं, जिसका असर आने वाले नगरीय निकाय व पंचायत चुनावों की तैयारियों पर भी पड़ता दिख रहा है। हालात यह हैं कि दोनों दलों के प्रदेश नेतृत्व को बार-बार बैठकों और दिशा-निर्देशों के जरिए अपने ही कार्यकर्ताओं व नेताओं को एकजुट रखने की कवायद करनी पड़ रही है।

कांग्रेस : प्रदेश अध्यक्ष पद को लेकर खींचतान, अनुशासन के नाम पर नई गाइडलाइन

प्रदेश कांग्रेस कमेटी (पीसीसी) ने हाल ही में अपने नेताओं और टिकट दावेदारों के लिए नई गाइडलाइन जारी की है, जिसके तहत अब किसी भी धरना, आंदोलन या राजनीतिक कार्यक्रम से पहले पीसीसी और जिला कांग्रेस कमेटी को सूचना देना अनिवार्य कर दिया गया है। राजनीतिक हलकों में इसे संगठनात्मक अनुशासन से जोड़कर देखा जा रहा है, मगर असल वजह यह मानी जा रही है कि पार्टी नहीं चाहती कि चुनाव से पहले भीतरी गुटबाजी सार्वजनिक रूप से उजागर हो।

संगठन के भीतर की खींचतान प्रदेश अध्यक्ष पद को लेकर सबसे ज्यादा मुखर होकर सामने आई है। एक ओर पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव जिम्मेदारी संभालने की इच्छा जता चुके हैं, तो दूसरी ओर मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष युवा नेतृत्व की दुहाई देकर अपनी कुर्सी बचाने के प्रयास में जुटे नजर आए। इस बयानबाजी के बीच पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने खुद को विवाद से दूर रखते हुए यह संकेत दिया कि अंतिम फैसला पार्टी हाईकमान ही करेगा।

गुटबाजी का यह असर सिर्फ शीर्ष नेतृत्व तक सीमित नहीं है। हाल ही में बिलासपुर जिले में यूथ कांग्रेस के संगठनात्मक चुनावों को लेकर हुई एक बैठक में वरिष्ठ नेता ने बिना किसी का नाम लिए संगठन के भीतर पनप रही गुटबाजी पर तीखी टिप्पणी की, जिससे यह जाहिर होता है कि यह प्रवृत्ति जमीनी स्तर तक फैल चुकी है।

यह तस्वीर प्रदेश युवा कांग्रेस अध्यक्ष पद की दौड़ में और भी साफ हो जाती है। अभी तक चुनाव की औपचारिक घोषणा नहीं हुई है, पर इच्छुक चेहरों की सक्रियता और उनके पीछे खड़े वरिष्ठ नेताओं के समीकरण जरूर सामने आ गए हैं। भिलाई से जिस युवा चेहरे को पार्टी के ही एक वरिष्ठ नेता ने आगे बढ़ाकर राजनीति में पहला बड़ा अवसर दिया था, युवक कांग्रेस चुनाव की मौजूदा खींचतान में वही चेहरा अब उसी वरिष्ठ नेता के खिलाफ दिख रहा है। इससे पहले उन दोनों नेताओं को एक-दूसरे के विश्वस्त - करीबी और एक ही खेमे के नेता के रूप में जाना जाता रहा है, इस बार अपने समर्थक को आगे बढ़ाते हुए एक अलग दावेदारी खड़ी करते नजर आए, जबकि दूसरी तरफ वरिष्ठ नेता का समर्थन एक अन्य दावेदार की ओर बताया जा रहा है। इस तरह संगठन के भीतर ही दो समांतर खेमे सक्रिय हो गए हैं, जिनकी अगुवाई करने वाले नेताओं का रिश्ता कभी करीबी शिष्य-गुरु जैसा माना जाता था। दोनों ओर से अब तक कोई सीधा बयान नहीं आया है, लेकिन जमीनी सक्रियता और समर्थकों की गोलबंदी से यह टकराव खुद-ब-खुद उजागर हो रहा है।

भाजपा : सरकार और संगठन में 'सर्जरी' की अटकलें

सत्तारूढ़ भाजपा भी गुटबाजी के इस दौर से अछूती नहीं है। बीते कुछ महीनों में रायपुर स्थित कुशाभाऊ ठाकरे परिसर में प्रदेश पदाधिकारियों और कोर ग्रुप की कई अहम बैठकें हो चुकी हैं, जिनमें राष्ट्रीय व प्रदेश स्तर के वरिष्ठ नेता शामिल हुए। इन बैठकों के बाद राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा तेज हो गई कि जल्द ही सरकार और संगठन दोनों में बड़े स्तर पर फेरबदल देखने को मिल सकता है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय स्वयं भाजपा के राष्ट्रीय नेतृत्व से लगातार संपर्क में रहे हैं और मानसून सत्र से पहले भी उन्होंने विधायक दल की अहम बैठक बुलाकर संगठन को एकजुट रखने का प्रयास किया। पार्टी की ओर से भले ही खुलकर किसी असंतोष की बात स्वीकार न की गई हो, लेकिन बार-बार हो रही बैठकों और संभावित बदलावों की अटकलों से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि संगठन के भीतर तालमेल बिठाने की कवायद जारी है।

आगे की राह

कुल मिलाकर छत्तीसगढ़ में दोनों प्रमुख दलों के सामने चुनौती एक जैसी है सार्वजनिक मंच पर अनुशासन का दिखावा और भीतरखाने बढ़ती बेचैनी के बीच संतुलन बनाना। कांग्रेस के लिए यह चुनौती नेतृत्व को लेकर उठ रहे सवालों को शांत करने की है, तो भाजपा के लिए संगठनात्मक फेरबदल के जरिए एकजुटता का संदेश देने की। आने वाले दिनों में नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव नजदीक आने के साथ यह देखना दिलचस्प होगा कि दोनों दल जनता के सामने जाने से पहले अपने-अपने घर को कितनी जल्दी और कितनी खूबी से दुरुस्त कर पाते हैं।

छत्तीसगढ़ में अफसरशाही बनाम जनप्रतिनिधि !

सांसद ने खोला मोर्चा, लोकसभा तक पहुंचा मामला

- छत्तीसगढ़ में जनप्रतिनिधियों और अफसरों के बीच बढ़ी टकराव की आंच
- रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल के बाद अब दुर्ग सांसद विजय बघेल ने भी दायर की विशेषाधिकार हनन की शिकायत
- फोन कॉल का जवाब नहीं देने और जनहित के मामलों में सहयोग न करने का आरोप
- लोकसभा सचिवालय ने राज्य शासन और संबंधित अधिकारियों से मांगा जवाब
- शिकायत सही साबित हुई तो संबंधित अधिकारियों पर हो सकती है बड़ी कार्रवाई
- पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने सरकार पर बोला हमला, कहा- दिल्ली और नागपुर से चल रही सरकार
- अफसर बनाम जनप्रतिनिधि विवाद से प्रदेश की राजनीति में मचा भूचाल
- क्या प्रशासनिक व्यवस्था पर उठ रहे हैं बड़े सवाल?

छत्तीसगढ़ में जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों के बीच बढ़ता टकराव अब राष्ट्रीय स्तर तक पहुंच गया है। रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल के बाद अब दुर्ग सांसद विजय बघेल ने भी अधिकारियों के कथित असहयोग और उपेक्षापूर्ण रवैये को लेकर लोकसभा अध्यक्ष के समक्ष विशेषाधिकार हनन की शिकायत दर्ज कराई है। लगातार सामने आ रही इन शिकायतों ने प्रदेश की राजनीति और प्रशासनिक गलियारों में हलचल तेज कर दी है।

फोन नहीं उठाने का आरोप, सांसद ने जताई नाराज़गी

दुर्ग सांसद विजय बघेल ने आरोप लगाया है कि भिलाई नगर निगम के तत्कालीन आयुक्त राजीव कुमार पांडेय और भिलाई-चरोदा नगर निगम के आयुक्त डीएस राजपूत ने उनके फोन कॉल्स का जवाब नहीं दिया। उनका कहना है कि जनहित से जुड़े मामलों में भी अधिकारियों ने अपेक्षित सहयोग नहीं किया, जिससे जनता के कार्य प्रभावित हुए।

पहले भी उठ चुका है ऐसा विवाद

इससे पहले रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने स्वास्थ्य विभाग के सचिव आईएएस अमित कटारिया पर फोन पर आपत्तिजनक व्यवहार करने का आरोप लगाते हुए विशेषाधिकार हनन की शिकायत की थी। अब लगातार दूसरी शिकायत सामने आने से यह मामला और अधिक गंभीर माना जा रहा है।

लोकसभा सचिवालय ने मांगा जवाब

दो सांसदों द्वारा लगातार शिकायत किए जाने के बाद लोकसभा सचिवालय ने मामले को गंभीरता से लेते हुए राज्य शासन और संबंधित अधिकारियों से स्पष्टीकरण मांगा है। यदि जांच में शिकायतों के आरोप सही पाए जाते हैं, तो संसदीय विशेषाधिकारों के उल्लंघन के तहत संबंधित अधिकारियों के खिलाफ संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार कार्रवाई की जा सकती है।

भूपेश बघेल का सरकार पर हमला

इस पूरे घटनाक्रम पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने राज्य सरकार को निशाने पर लिया। उन्होंने आरोप लगाया कि छत्तीसगढ़ की सरकार दिल्ली और नागपुर से संचालित हो रही है तथा चुने हुए जनप्रतिनिधियों के साथ इस तरह का व्यवहार संसदीय परंपराओं और लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है।

राजनीतिक गलियारों में बढ़ी हलचल

लगातार सामने आ रही शिकायतों ने प्रशासनिक व्यवस्था और सरकार की कार्यशैली पर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों के बीच संवाद और समन्वय की स्थिति जल्द नहीं सुधरी, तो यह विवाद आने वाले समय में बड़े राजनीतिक संकट का रूप ले सकता है।

अफसरशाही बनाम जनप्रतिनिधि: टकराव बढ़ा तो जनता के काम अटके

छत्तीसगढ़ में जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अफसरों के बीच टकराव के कई मामले सामने आ चुके हैं। कहीं कलेक्टर को हटाने की मांग उठी, तो कहीं विवाद इतना बढ़ा कि जनप्रतिनिधियों को धरने और हाउस अरेस्ट तक की नौबत आई।

कोरबा में पूर्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल ने तत्कालीन कलेक्टर को हटाने की मांग की थी। वहीं पूर्व गृहमंत्री ननकी राम कंवर और प्रशासन के बीच विवाद भी काफी बढ़ गया था। बेमेतरा में एक कार्यक्रम के दौरान डॉ. रमन सिंह ने प्रशासनिक व्यवस्था पर नाराजगी जताते हुए कलेक्टर-एसपी को कार्यप्रणाली सुधारने की नसीहत दी थी।

इन घटनाओं से बड़ा सवाल जनप्रतिनिधियों और अफसरों के बीच समन्वय का है। दोनों की जिम्मेदारी जनता के काम को आगे बढ़ाना है। जब टकराव बढ़ता है, तो सबसे ज्यादा नुकसान आम जनता का होता है।

कुर्सी किसी की भी हो, लोकतंत्र में असली मालिक जनता ही है।

प्रितेश बंजारे
संवाददाता, रायपुर

छत्तीसगढ़ के कई विधायक विधानसभा में नहीं पूछ रहे सवाल, कुछ का प्रदर्शन जबरदस्त

विशेष लेख- ठीहा छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ के षष्टम विधानसभा को लगभग ढाई साल बीत चुके हैं लेकिन राज्य की सबसे बड़ी पंचायत में बहुत से माननीय मौन है। ऐसा लग रहा है मानों विधानसभा में हाजरी लगाने जाते हैं वैसे में जनता अपने विधायक को किस नजर से देखेगी? चुनाव के समय वोट बटोरने के लिए नेता जी मंचों से बड़े-बड़े वादे करते हैं, लेकिन जब जनता की समस्याओं को उठाने का सबसे बड़ा मंच विधानसभा का पटल मिलता है, तब कई माननीय मौन धारण कर लेते हैं। विधानसभा क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, किसान, सड़क, बिजली और पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं से जुड़े ढेरों मुद्दे हैं, साथ ही विभिन्न शासकीय विभागों से संबंधित अनगिनत समस्याएं व्याप्त हैं। इसके बावजूद जनप्रतिनिधियों की यह खामोशी हैरान करने वाली है। अब ढाई साल गुजर चुके हैं और विधायकों की जनता के प्रति जवाबदेही और जिम्मेदारी तय करनी होगी। यदि विधायकों ने अपना मौन व्रत नहीं तोड़ा तो अगले चुनाव में हो सकता है उनके लिए संकट न बन जाए। हाल ही में विधानसभा के आंकड़े इसी ओर इशारा कर रहे हैं।

विधानसभा द्वारा जारी यह रिपोर्ट फरवरी-मार्च 2024 से लेकर जुलाई 2026 तक की समयावधि का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। इस अवधि के दौरान कुल 8 सत्र आयोजित हुए, जिनमें 71 बैठकों की संख्या दर्ज की गई और सदस्यों द्वारा कुल 12,559 सवाल पूछे गए। संसदीय नियमों के अनुसार एक बैठक में एक विधायक अधिकतम 4 सवाल ही पूछ सकता है। यदि 71 बैठकों का गणित लगाया जाए, तो अधिकतम सवालों की संख्या 284 होती है।

सबसे ज्यादा प्रश्न पूछने वाले विधायक

इस कसौटी पर खरा उतरते हुए सदन की हर बैठक में पूरे 4 सवाल पूछने वाले विधायकों में धरमलाल कौशिक, अजय चंद्राकर, भावना बोहरा और भोलाराम साहू शामिल हैं, जिन्होंने शत-प्रतिशत 284-284 सवाल दाखिल किए। वहीं 283 सवाल के साथ पुन्नूलाल मोहले पांचवे स्थान पर हैं। इन आंकड़ों में जहाँ कुछ जनप्रतिनिधियों का प्रदर्शन सक्रियता की मिसाल पेश करता है, वहीं कई दिग्गजों का प्रदर्शन जनता के भरोसे पर पानी फेरता नजर आता है।

ज्यादा सवाल पूछने वाले विधायक | **कम सवाल पूछने वाले विधायक**

सबसे कम प्रश्न पूछने वाले विधायक

यदि सदन में सबसे कम सवाल पूछने वाले 5 विधायकों की सूची में अमर अग्रवाल 0, विक्रम उसेण्डी 12, भूलन सिंह मराबी 17, भईया लाल राजवाड़े 18 तथा उद्देश्वरी पैकरा 23 और नीलकंठ टेकाम 23 के नाम दर्ज हैं।

विधानसभा के आंकड़ों से साफ जाहिर होता है कि क्षेत्र का कद और विधायक का प्रोफाइल कितना भी बड़ा क्यों न हो, जब बात जनता के सरोकारों को सदन में उठाने की आती है, तो कई दिग्गज पस्त नजर आते हैं।

सबसे ज्यादा चौंकाने वाली और निराशाजनक तस्वीर बिलासपुर जैसे बड़े और बहुचर्चित विधानसभा क्षेत्र से सामने आई है, जहाँ का प्रतिनिधित्व करने वाले पूर्व मंत्री अमर अग्रवाल का स्कोर पूरे ढाई साल के दौरान 'शून्य' (0) रहा है। इतने लंबे संसदीय अनुभव और हाई-प्रोफाइल बैकग्राउंड के बावजूद बिलासपुर शहर के बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य और विकास से जुड़े एक भी मुद्दे पर उनका सदन में मुंह न खोलना बिलासपुर की जनता के प्रति उनकी उदासीनता को ही उजागर करता है।

इसी तरह, राज्य की अन्य चर्चित और हाई-प्रोफाइल सीटों का हाल भी कुछ अलग नहीं है। चुनाव के दौरान राज्यभर में सुर्खियों में रही साजा विधानसभा सीट से जीतकर आए ईश्वर साहू ने पूरे कार्यकाल में महज 28 सवाल ही पूछे हैं। साजा क्षेत्र की जनता ने जिस भारी उम्मीद और भरोसे के साथ उन्हें चुनकर छत्तीसगढ़ की सबसे बड़ी पंचायत में भेजा था, उस अनुपात में उनका यह प्रदर्शन बेहद कमजोर है।

यही हाल भरतपुर-सोनहत से विधायक और पूर्व केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह का है, जो मात्र 24 सवालों पर ही सिमट कर रह गईं। बड़े-बड़े मंचों से दहाड़ने वाले इन कद्दावर नेताओं की सदन के भीतर यह चुप्पी यह सोचने पर मजबूर करती है कि चुनाव जीत जाने के बाद जनता की आवाज बनना इनकी प्राथमिकता में शामिल ही नहीं रह जाता। अब देखना होगा कि बचे हुए ढाई साल में ये जनप्रतिनिध अपनी खामोशी तोड़ते हैं या अपना मौन व्रत जारी रखते हैं।

स्मार्ट मीटर लगते ही बढ़ा बिजली बिल ? छत्तीसगढ़ में मचा सियासी घमासान

रायपुर| छत्तीसगढ़ में इन दिनों बिजली के बिल आम उपभोक्ताओं को करंट मार रहे हैं। प्रदेश के घरों में नए-नवेले स्मार्ट मीटर क्या लगे, आम आदमी के बजट का पूरा गणित ही गड़बड़ा गया है। इस जलते हुए मुद्दे पर प्रदेश का सियासी पारा भी सातवें आसमान पर पहुंच चुका है। सत्ताधारी दल भाजपा जहां इस पूरी व्यवस्था और कीमतों में बढ़ोतरी का बचाव करने में जुटी है, वहीं मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस इस मुद्दे को लेकर सरकार की घेराबंदी करने का कोई मौका नहीं छोड़ रही है। इस राजनीतिक शह और मात के खेल के बीच जमीनी हकीकत यह है कि हर महीने आने वाले भारी-भरकम बिलों को देखकर आम जनता की हवाइयां उड़ी हुई हैं।

जनता क्या सोचती है इस बढ़े हुए बिजली के बिल को लेकर इसके लिए हमने लोगो से बातचीत करने ग्राउंड जीरो पर पहुचे, इस पर अपने घर के बाहर बैठी महिलाओ से बात करने पर उनमे से अधिकतर का कहना था की उनके घर आने वाला बिजली का बिल बीते कुछ महीने से बढ़कर आने लगा है, जो 500 का बिल हर महीने आता था अब एकदम से बढ़कर 1500-2000 आने लगा है , अधिक बिजली के बिल से उनकी आर्थिक स्थिति और घरेलु बजट पर इसका बुरा असर पड़ रहा है वही मौजूद एक अन्य युवक से बात करने पर उन्होंने बताया की वे किराए के घर में रहते हैं बढ़े हुए बीजली के बिल से घर से बाहर जीवन यापन करना और भी कठिन हो चूका है, उनका कहना था की घर मालिक ने तो स्मार्ट मीटर लगवा लिया उनका बस चलता तो वे स्मार्ट मीटर बिल्कुल नही लगवाते यानि इस बढ़े हुए बिल के पीछे उन्होंने स्मार्ट मीटर को कारण बताया है.

इस मामले पर हमने BJP के प्रदेश प्रवक्ता गौरीशंकर श्रीवास से उनकी राय जानी, जिस पर उन्होंने कहा की प्रदेश में स्मार्ट मीटर लाने का फैसला उनका नहीं, बल्कि पूर्ववर्ती भूपेश बघेल सरकार का था, साल 2021-22 में कांग्रेस के ही कार्यकाल के दौरान इस योजना का खाका तैयार हुआ और इसके टेंडर पास किए गए। ऐसे में जो योजना कांग्रेस खुद लेकर आई थी, आज उसी पर राजनीति करने का उसे कोई नैतिक अधिकार नहीं है। सरकार का तर्क है कि गर्मी के दिनों में बिजली की आपूर्ति और खपत दोनों बहुत ज्यादा बढ़ जाती है, जिससे बिलों का बढ़ना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। भाजपा ने उपभोक्ताओं को भरोसा दिलाया है कि आने वाले अगस्त महीने के बिलों में जनता को बड़ी राहत देखने को मिलेगी। बिजली दरों में मामूली बढ़ोतरी को जायज ठहराते हुए सत्तापक्ष का कहना है कि राज्य में बिजली की मांग 5,000 मेगावाट से ऊपर निकल चुकी है, जबकि सरकारी संयंत्रों से सिर्फ 3,000 मेगावाट का उत्पादन हो पा रहा है। ऐसे में एनटीपीसी और निजी कंपनियों से महंगे दामों पर बिजली खरीदकर आपूर्ति करनी पड़ रही है। स्मार्ट मीटर से मीटर रीडरों के बेरोजगार होने की अफवाहों को खारिज करते हुए सरकार ने दावा किया है कि सीएसपीडीसीएल सभी को रोजगार की गारंटी देगी। साथ ही भाजपा ने आरोप लगाया कि महतारी वंदन योजना की सफलता से घबराकर कांग्रेस केवल सरकार को बदनाम करने के लिए यह दुष्प्रचार कर रही है।

दूसरी तरफ, रायपुर के पूर्व महापौर प्रमोद दुबे ने भाजपा के इन दावों पर तीखा पलटवार करते हुए इसे सरकार की नाकामियों का पुलिंदा बताया है। उनका कहना है कि सत्ता में बैठी भाजपा अपनी हर नाकामी का ठीकरा पिछली सरकार और पुराने टेंडरों पर फोड़कर अपनी जिम्मेदारी से भाग रही है, अगर यह योजना इतनी ही त्रुटिपूर्ण है और इससे जनता परेशान है, तो वर्तमान सरकार इसे प्रदेश पर थोपने के लिए इतनी उतावली क्यों है? अगस्त महीने में बिल कम होने के सरकारी वादे को कांग्रेस ने महज एक कोरा झांसा करार दिया है। उनका कहना है कि जब सरकार खुद बिजली की दरों में बढ़ोतरी की बात स्वीकार कर रही है, तो बिल अचानक कैसे कम हो जाएंगे। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि छत्तीसगढ़ जैसे बिजली सरप्लस राज्य में सरकारी उत्पादन का घट जाना और निजी कंपनियों से महंगी बिजली खरीदना एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा है, ताकि चुनिंदा उद्योगपतियों को फायदा पहुंचाया जा सके और इसका पूरा बोझ आम जनता की जेब पर डाल दिया जाए। मीटर रीडरों के भविष्य को लेकर भी कांग्रेस ने सरकार को घेरा है कि नई तकनीक के नाम पर हजारों युवाओं के पेट पर लात मारी जा रही है। महतारी वंदन योजना के नाम पर सरकार एक हाथ से महिलाओं को एक हजार रुपये दे रही है और दूसरे हाथ से बिजली बिल के रूप में उनके पूरे घर का बजट लूट रही है।

इन दोनों राजनीतिक दलों के दावों और वादों से इतर, अगर बिजली दफ्तरों के चक्कर काट रहे आम नागरिकों की बात करें तो उनकी आपबीती बेहद दर्दनाक है। रायपुर के लगभग हर बिजली दफ्तर के बाहर इन दिनों बिल सुधरवाने के लिए उपभोक्ताओं की लंबी कतारें देखी जा सकती हैं। जिन घरों का बिल पहले बमुश्किल एक या दो हजार रुपये आता था, वहां अब सीधे पांच से आठ हजार रुपये के बिल थमाए जा रहे हैं। लोग शिकायत कर रहे हैं कि नए स्मार्ट मीटर इतनी तेजी से भागते हैं कि पंखा और एक बल्ब चलाने पर भी यूनिट का कांटा रॉकेट की रफ्तार पकड़ लेता है। नेताओं के लिए भले ही यह बयानों का दौर हो, लेकिन छत्तीसगढ़ की आम जनता के लिए यह हर महीने आने वाला एक ऐसा आर्थिक झटका है जिससे उबरना उनके लिए नामुमकिन होता जा रहा है।

रायपुर पुलिस कमिश्नरेट को लेकर सांसद बृजमोहन अग्रवाल का पत्र

मुख्यमंत्री से मांगे बड़े सुधार

रायपुर। रायपुर लोकसभा सांसद एवं पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को पत्र लिखकर राजधानी रायपुर की कानून-व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए पुलिस कमिश्नरेट व्यवस्था में व्यापक सुधार, अतिरिक्त पुलिस बल, संसाधन और क्षेत्राधिकार के पुनर्निर्धारण की मांग की है। सांसद ने अपने पत्र में कहा है कि कमिश्नरेट व्यवस्था लागू होने के बावजूद पर्याप्त पुलिस बल, संसाधन और स्पष्ट क्षेत्राधिकार के अभाव के कारण अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पा रहे हैं।

कमिश्नरेट बना, लेकिन पुलिस बल नहीं बढ़ा

सांसद ने पत्र में उल्लेख किया कि कमिश्नरेट व्यवस्था लागू होने के बाद राजपत्रित अधिकारियों की संख्या 19 से बढ़ाकर 37 कर दी गई, लेकिन उनके अधीन कार्य करने वाले पुलिसकर्मियों की संख्या में आवश्यक वृद्धि नहीं हुई। अलग से पुलिस बल स्वीकृत नहीं होने के कारण मौजूदा बल को ही विभिन्न कार्यालयों में तैनात करना पड़ रहा है, जिससे थानों की कार्यक्षमता और मैदानी पुलिसिंग प्रभावित हो रही है।

बढ़ती आबादी और ट्रैफिक के मुकाबले बल बेहद कम

पत्र के अनुसार रायपुर की जनसंख्या और वाहनों की संख्या में पिछले वर्षों में तेजी से वृद्धि हुई है, लेकिन यातायात पुलिस बल अभी भी आवश्यकता से काफी कम है। सांसद ने कहा कि राजधानी की जरूरतों के अनुरूप ट्रैफिक पुलिस की संख्या बढ़ाना समय की मांग है ताकि सुगम यातायात और बेहतर कानून-व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके।

500 अतिरिक्त पुलिसकर्मियों की तत्काल तैनाती की मांग

बृजमोहन अग्रवाल ने सुझाव दिया कि स्थिति को देखते हुए प्रदेश के अन्य जिलों और इकाइयों से लगभग 500 पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारियों की अस्थायी तैनाती रायपुर कमिश्नरेट और रायपुर ग्रामीण क्षेत्र में की जाए। साथ ही दीर्घकालिक समाधान के लिए नए पदों की स्वीकृति और रिक्त पदों पर शीघ्र भर्ती की जाए।

660 पद रिक्त होने पर जताई चिंता

पत्र में यह भी कहा गया है कि रायपुर कमिश्नरेट और ग्रामीण पुलिस के संयुक्त रक्षित केंद्र में लगभग 660 पद रिक्त हैं। इनमें बड़ी संख्या आरक्षकों, प्रधान आरक्षकों, सहायक उपनिरीक्षकों, उपनिरीक्षकों और अन्य पदों की है। सांसद का कहना है कि इतनी बड़ी संख्या में रिक्तियां होने से अपराध नियंत्रण, गश्त और कानून-व्यवस्था प्रभावित हो रही है।

शहरी क्षेत्रों को कमिश्नरेट में शामिल करने का सुझाव

सांसद ने पत्र में कहा कि नगर निगम के कई पूरी तरह शहरी क्षेत्र अभी भी रायपुर ग्रामीण पुलिस के अधीन हैं। उन्होंने ऐसे क्षेत्रों को रायपुर पुलिस कमिश्नरेट में शामिल करने की मांग की है ताकि पुलिसिंग अधिक प्रभावी और व्यावहारिक हो सके। कमल विहार, एयरपोर्ट क्षेत्र और सिलतरा औद्योगिक क्षेत्र जैसे स्थानों में अलग-अलग पुलिस इकाइयों के कारण समन्वय संबंधी समस्याएं सामने आने की बात भी पत्र में कही गई है।

नए कार्यालय भवन और संसाधनों की भी मांग

पत्र में अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, पुलिस उपायुक्त, सहायक पुलिस आयुक्त सहित अन्य अधिकारियों के लिए स्थायी कार्यालय भवनों के निर्माण, सरकारी वाहनों की संख्या बढ़ाने तथा आधुनिक संसाधन उपलब्ध कराने का भी आग्रह किया गया है। सांसद का कहना है कि वर्तमान में कई कार्यालय अस्थायी व्यवस्था से संचालित हो रहे हैं, जिससे प्रशासनिक कार्य प्रभावित होते हैं।

मुख्यमंत्री से गंभीर विचार करने का आग्रह

अपने पत्र के अंत में सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने मुख्यमंत्री से आग्रह किया है कि राजधानी की वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को देखते हुए रायपुर पुलिस कमिश्नरेट के क्षेत्राधिकार का पुनर्निर्धारण किया जाए, पर्याप्त पुलिस बल उपलब्ध कराया जाए तथा पुलिस अधोसंरचना को मजबूत बनाने के लिए आवश्यक प्रशासनिक निर्णय शीघ्र लिए जाएं।

समय सीमा समाप्त, 60% काम अब भी अधूरा: कार्रवाई के बजाय ठेकेदार को एक्सटेंशन देने की तैयारी में PWD

रायपुर। राजधानी रायपुर के बहुचर्चित 1500 मीटर लंबे स्काईवॉक प्रोजेक्ट ने अपनी अप्रैल 2026 की डेडलाइन पार कर ली है, लेकिन अब तक केवल 40 प्रतिशत काम ही पूरा हो सका है। तय समय सीमा बीत जाने के बाद भी, लोक निर्माण विभाग (PWD) निर्माण एजेंसी पर कार्रवाई करने के बजाय उसे दिसंबर 2026 तक का नया एक्सटेंशन देने की तैयारी में है। साइट पर काम की वर्तमान सुस्त रफ्तार और अधूरे स्ट्रक्चर को देखते हुए नई समय सीमा में भी प्रोजेक्ट का पूरा होना मुश्किल लग रहा है।

दिखावे के गर्डर, लेकिन कनेक्टिविटी और सुविधाएं नदारद

मौके पर कचहरी चौक, आंबेडकर अस्पताल चौक और शास्त्री चौक पर गर्डर और बीम चढ़े हुए नजर आते हैं। पहली नजर में यह काम तेज होने का भ्रम पैदा करते हैं, लेकिन हकीकत में पैदल चलने वालों के लिए जरूरी कनेक्टिविटी अभी भी कोसों दूर है। लिफ्ट, एस्केलेटर, रोटरी और सीढ़ियों का काम बहुत पीछे है, और ऊपरी हिस्सों की वेल्डिंग तक पूरी नहीं हुई है।

कलेक्ट्रेट और जिला न्यायालय की तरफ उतरने वाले तीनों एग्जिट प्वाइंट अधूरे पड़े हैं। डीकेएस से आंबेडकर अस्पताल को कनेक्ट करने वाला हिस्सा बंद है। इसके अलावा जयस्तंभ चौक, तहसील कार्यालय व शहीद स्मारक की तरफ भी निर्माण पूरा नहीं हुआ है। PWD के अधिकारी इस लेटलतीफी का कारण शहर के भारी ट्रैफिक को बता रहे हैं। लेकिन सवाल यह उठता है कि जब प्रोजेक्ट की समय सीमा पहले से तय थी, तो ट्रैफिक और साइट की चुनौतियों के हिसाब से पर्याप्त मैनपावर लगाकर कार्ययोजना क्यों नहीं बनाई गई?

प्रोजेक्ट के मुख्य आंकड़े

कुल लागत: लगभग 77 करोड़ रुपए
लंबाई: 1500 मीटर
स्थिति: केवल 40% पूरा (60% अब भी बाकी)
पुरानी डेडलाइन: अप्रैल 2026 में समाप्त

विधायक मूणत ने लगाई फटकार, पूछा- काम अधूरा क्यों?

स्काईवॉक के काम में हो रही इस भारी लेटलतीफी पर रायपुर पश्चिम के विधायक राजेश मूणत ने PWD अधिकारियों, ईएनसी, ब्रिज विभाग और ठेकेदार की बैठक ली। बैठक में जब उन्होंने देरी का कारण पूछा, तो ठेकेदार ने बारिश और मैनपावर (मजदूरों) की कमी का हवाला दिया। इस पर विधायक ने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि वे केवल नई तारीख तय करके मामले को न रफा-दफा करें, बल्कि यह भी स्पष्ट करें कि काम समय पर क्यों नहीं हुआ और इस देरी के लिए जिम्मेदार कौन है।

PWD की हाई लेवल मीटिंग में होगा नया फैसला

यह स्काईवॉक प्रोजेक्ट लंबे समय से विवादों और राजनीतिक खींचतान का शिकार रहा है। साल 2024-25 में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की सरकार ने इसे इसके मूल नक्शे के अनुसार पूरा करने का निर्णय लिया था और 37.75 करोड़ रुपए का अतिरिक्त बजट स्वीकृत किया था (जिससे कुल लागत करीब 77 करोड़ रुपए तक पहुंच गई)। 21 मई 2025 को PSA कंस्ट्रक्शन को यह काम सौंपकर अप्रैल 2026 तक पूरा करने का लक्ष्य दिया गया था। अब टेंडर की मियाद खत्म होने के बाद एक्सटेंशन पर फैसला लेने के लिए उच्चस्तरीय बैठक बुलाई गई है।

हादसों को खुला न्योता दे रहे पुराने स्ट्रक्चर

काम में देरी के साथ-साथ साइट पर सुरक्षा में भी चूक नजर आ रही है। स्काईवॉक के कई हिस्सों में पुरानी संरचनाओं को अब तक नहीं हटाया गया है और इनके हिस्से लटके दिखाई देते हैं। तेज हवा या आंधी चलने पर इन हिस्सों के गिरने की आशंका बनी रहती है। नई संरचना तैयार करने के साथ-साथ इन पुराने हिस्सों को हटाकर निर्माण स्थल को सुरक्षित करना भी बेहद जरूरी है।

एक्सटेंशन देने के लिए होगी बैठक

मीडिया से बात करते हुए ब्रिज संभाग, रायपुर के ईई बीके गोठी ने बताया कि स्काईवॉक को लेकर बैठक हुई है। ठेका एजेंसी दिसंबर तक काम पूरा करने का दावा कर रही है, जबकि टेंडर की निर्धारित समय सीमा समाप्त हो चुकी है। एक्सटेंशन देने के संबंध में एक उच्चस्तरीय बैठक होगी। इसके बाद ही एक्सटेंशन और आगे की कार्ययोजना पर अंतिम निर्णय लिया जाएगा।

रायपुर में फुटपाथों पर अतिक्रमण, पैदल चलने वाले लोग मजबूर होकर सड़कों पर चलने को विवश

रायपुर। राजधानी रायपुर में आम नागरिकों की सुविधा के लिए बनाए गए फुटपाथ आज अपने मूल उद्देश्य से भटक चुके हैं। शहर के कई प्रमुख मार्गों पर फुटपाथों पर गुमटी, ठेले और अस्थायी दुकानों का कब्ज़ा होने के कारण पैदल चलने वालों के लिए सुरक्षित रास्ता लगभग समाप्त हो गया है। ऐसे में लोगों को मजबूर होकर व्यस्त सड़कों पर चलना पड़ता है, जिससे दुर्घटनाओं का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है।

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि फुटपाथ पैदल यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा के लिए बनाए गए थे, लेकिन वर्तमान में अधिकांश फुटपाथों पर अतिक्रमण होने से उनका उपयोग करना संभव नहीं रह गया है। कई स्थानों पर गुमटी और ठेले लगने से पैदल चलने वालों को सड़क पर उतरना पड़ता है, जहाँ तेज रफ्तार वाहनों के बीच सफर करना उनकी मजबूरी बन गई है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यदि फुटपाथों को अतिक्रमण मुक्त नहीं कराया गया तो भविष्य में सड़क दुर्घटनाओं की संख्या और बढ़ सकती है। यातायात व्यवस्था भी प्रभावित हो रही है और शहर की सुंदरता पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ रहा है।

शहरवासियों ने नगर निगम और जिला प्रशासन से मांग की है कि फुटपाथों पर किए गए अवैध कब्ज़ों को हटाने के लिए नियमित अभियान चलाया जाए, ताकि पैदल चलने वालों को उनका अधिकार मिल सके और सड़क दुर्घटनाओं की आशंका कम हो।

राजधानी रायपुर के तेजी से बढ़ते शहरी विकास के बीच यह आवश्यक हो गया है कि पैदल यात्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाए। फुटपाथों को उनके वास्तविक उद्देश्य के अनुरूप उपयोग में लाना न केवल यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाएगा, बल्कि नागरिकों की सुरक्षा भी सुनिश्चित करेगा।

धान के कटोरा म दरार | मउसम के मार अउ लाचार बेवस्था के बीच छत्तीसगढ़ के किसान

शशिकला
विशेष लेख

कोनो घलो राज के बेवस्था अउ ओकर आत्मा के आधार ओकर किसान होथे। छत्तीसगढ़, जेला अब्बड़ गरब ले 'धान के कटोरा' कहे जाथे, आज अपन ही अन्नदाता मन के बेबसी अउ निरासा के गवाही बनत हे। बछर 2026 ह छत्तीसगढ़ के किसान मन बर एक अइसन दुख लेके आय हे, जेमा एक डाहर परकरिती के मार हे, त दूसर डाहर ढील्ला सरकारी बेवस्था। ये दुनो मार ह छत्तीसगढ़ के किसान मन के कनिहा टोर के रख दे हे अउ ओमन ला करजा अउ बरबादी के कगार म लाके खड़ा कर दे हे।

मउसम के दोहरा मार

ये बछर छत्तीसगढ़ म मानसून ह किसान मन के धीरज के बड़का परिच्छा ले हावय। बरसा अब्बड़ देरी ले होय के कारन किसानी के पूरा चक्र ह डगमगा गे। खेती-खार के सुरुआत, जउन ह बोअई अउ रोपई बर सबले जरुरी होथे, ओहा पूरा सुक्खा के भेंट चढ़ गे। खेत मन म दरार पर गे अउ पानी के एकक बूंद बर तरसत किसान मन के सुरु के फसल उंकर आंखी के आघू म पूरा बरबाद होगे।

किसान मन अभी सुक्खा के ये गहिरा सदमा ले उबरे घलो नइ हे, कि परकरिती ह एक नवा रूप देखा दिस। बादर ले राहत के बूंद बरसे के जघा म अचानक आफत बरसे ला धर लिस। अब्बड़ पानी गिरे के कारन छत्तीसगढ़ के कई जगा म भयंकर बाढ़ कस हाल बनगे। जउन फसल ह बड़े मुसकिल ले सुक्खा ले बचे रिहिस, वोहा बाढ़ के तेज धार म बोहा गे। एक ही मउसम म पहिली सुक्खा अउ फेर बाढ़ के ये बिनास ह किसान मन के आंखी म सिरिफ आंसू अउ आगू के दिन बर गहिरा अंधियार छोड़ दे हे।

खातू के भारी कमी अउ छलावा साबित होइस टोकन सिसटम

परकरिती के मार सहत किसान ला जब सरकारी बेवस्था ले सबले जादा आस रिहिस, तब ओला एक बोरा खातू (खाद) बर दर-दर भटके बर मजबूर कर दे गिस। ये पइत किसान मन ला आसानी ले खातू देवाय के बड़े-बड़े दावा के साथ टोकन बेवस्था लागू करे गे रिहिस, फेर ये बेवस्था पूरा तरह ले फेल अउ एक छलावा साबित होइस।

छत्तीसगढ़ सरकार ह खातू बांटे बर टोकन बेवस्था लागू करे रिहिस, जेमा किसान मन ला किस्त म खातू दे जात रिहिस। किसान मन ला खातू बिसाये बर पहिली टोकन ले ला पड़त रिहिस। जेकर कारन समय म खातू नइ मिले अउ कालाबाजारी के कारन किसान मन ला समस्या के सामना करे ला पड़िस।

सहकारी समिति मन के गोदाम खाली परे रिहिस अउ हाथ म टोकन धरे किसान मन टरटर ले घाम म अपन पारी के अगोरा करत रहिन। जब फसल ला दवई-खातू के सबले जादा जरूरत रिहिस, तब समिति मन म खाद के भारी अकाल रिहिस। ये खराब बेवस्था के सीधा फइदा बजार के सुवारथी मनखे मन उठाइन। मजबूरी म किसान मन ला अपन खून-पसीना के कमई के पइसा ला निजी दूकानदार अउ 'कोचिया' मन ला दे ला पड़िस। ये बिचउलिया मन ह किसान मन ला मनमाना अउ उंचा दाम म खातू बेचिन। येहा सिरिफ खातू के कमी नइ रिहिस, बल्कि येहा सीधा-सीधा अन्नदाता के मजबूरी के सोसन रिहिस।

किसानी चक्र के बिगड़त संतुलन

मानसून के देरी ले आय अउ ओकर बाद खातू के भारी कमी के कारन ये बछर किसानी के पूरा चक्र ह पिछड़ गे हे। जउन फसल के बोअई अउ रोपई समय म हो जाना रिहिस, ओहा हफता पाछू चलत हे। एकर सीधा अउ खराब असर आने वाला समय म फसल के कटई म पड़ही। कटई म होए वाला ये देरी ह न सिरिफ आगू के फसल (रबी) के तइयारी ला असर करही, बल्कि येहा किसान मन के बजार चक्र, उंकर कमई अउ तिहार के समय म उंकर बिसउनी के ताकत ला घलो महिना पाछू धकेल दिही।

फसल बीमा किसान मन बर राहत के आस

ये जम्मो निरासा अउ अंधियार के बीच, परसासन डहर ले अभी के उठाय गे कदम ह किसान मन बर बुड़त ला तिनका के सहारा साबित हो सकत हे। छत्तीसगढ़ सासन ह फसल के भारी नुकसान के जांच करे बर सर्वे के काम सुरु कर दे हे।

सबले बड़े अउ तुरते मिले वाला राहत ये हवय कि फसल बीमा के आखरी तारिख ला बढ़ा दे गे हे। पहिली फसल बीमा कराय के आखरी तारिख 31 जुलाई 2026 तय करे गे रिहिस, जेला अब हाल के गम्भीरता ला देखत हुए बढ़ा के 14 अगस्त 2026 कर देय गे हे। येहा सरकार के एक बड़का सराहनीय कदम आय। एकर ले वो हजारो किसान मन ला अपन फसल के जोखिम ला सुरच्छित करे के एक अउ मउका मिलही जउन मन अब तक सरवर डाउन होय, कागद के कमी या जानकारी के अभाव म बीमा नइ करा पाय रिहिन।

छत्तीसगढ़ी के अस्मिता अऊ स्वाभिमान बर लड़इया पुरोधा नंद किशोर शुक्ल ले गोठ-बात

चंचल द्विवेदी
संवाददाता, रायपुर

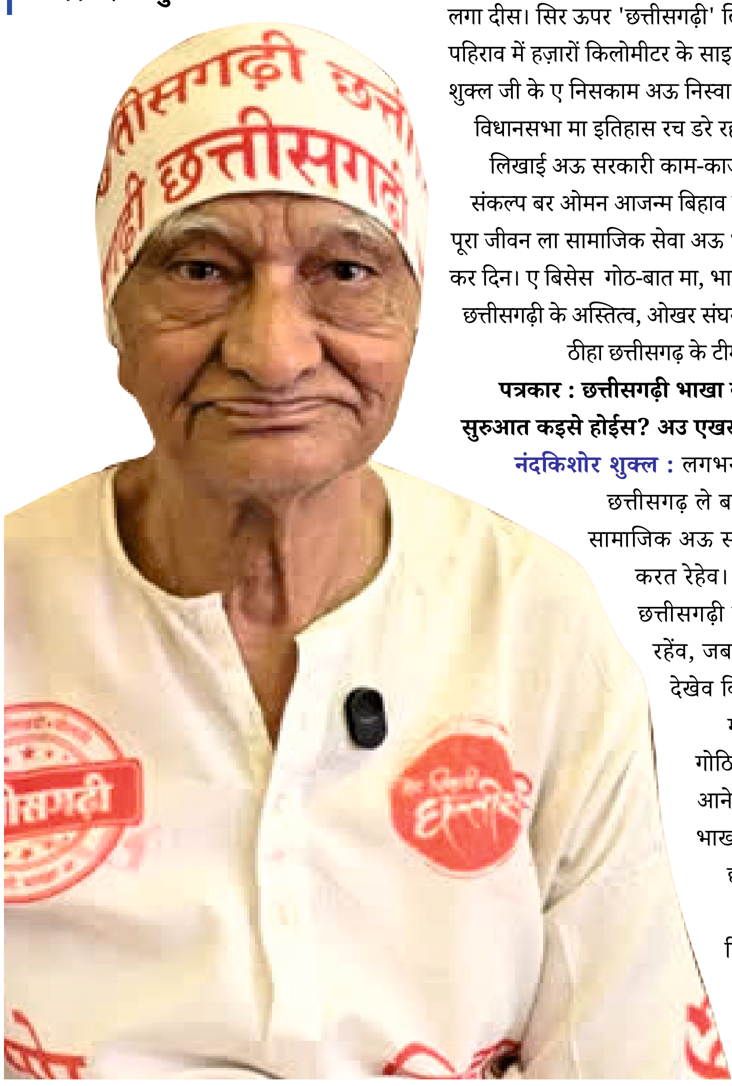

अपन महतारी भाखा छत्तीसगढ़ी ला ओखर मान-सम्मान अऊ राजभाषा के दर्जा देवाए बर नंद किशोर शुक्ल जी अपन पूरा जीवन लगा दीस। सिर ऊपर 'छत्तीसगढ़ी' लिखाय पागा अऊ परंपारिक पहिराव में हज़ारों किलोमीटर के साइकिल अऊ पदयात्रा करइया शुक्ल जी के ए निसकाम अऊ निस्वार्थ संघर्ष ह बछर 2007 मा विधानसभा मा इतिहास रच डरे रहीस। छत्तीसगढ़ी ला पढ़ाई-लिखाई अऊ सरकारी काम-काज के मुख्य धारा मा लाए के संकल्प बर ओमन आजन्म बिहाव नई करे के निर्नय लीन अऊ पूरा जीवन ला सामाजिक सेवा अऊ भाखा आंदोलन मा समर्पित कर दिन। ए बिसेस गोठ-बात मा, भाखा आंदोलन के ए पुरोधा ले छत्तीसगढ़ी के अस्तित्व, ओखर संघर्ष अऊ वर्तमान स्थिति ऊपर ठीहा छत्तीसगढ़ के टीम ले विस्तार ले चर्चा होईस।

पत्रकार : छत्तीसगढ़ी भाखा बर आप मन के संघर्ष के सुरुआत कइसे होईस? अउ एखर प्रेरना कहा ले मिलिस ?

नंदकिशोर शुक्ल : लगभग 27–28 बछर तक मंय छत्तीसगढ़ ले बाहर अलग-अलग राज्य म सामाजिक अऊ सहकारिता के क्षेत्र म काम करत रेहेव। ओती रहत-रहत मंय खुद छत्तीसगढ़ी बोलना लगभग भुला चुके रहेंव, जब वापस लहुट के आयेव त देखेव कि पढ़े-लिखे छत्तीसगढ़िया मन घलो आपस म हिंदी म गोठियाथें, बंगाली, मराठी अऊ आने राज्य के मनखे मन अपन भाखा म गर्व ले गोठियाथें, फेर छत्तीसगढ़िया मन अपन ही मातृभाषा ले दूरी बनावत रिहिन। ओही दिन ठान लेव कि छत्तीसगढ़ी ला ओकर सम्मान दिलाय बर काम करहूँ।

पत्रकार : 2007 म राजभाषा के दरजा मिले के बाद घलो छत्तीसगढ़ी बेवहार म काबर नइ आ पाइस?

नंदकिशोर शुक्ल : सबले बड़का कारन जागरूकता के कमी हे। आज घलो बड़े संख्या म मनखे मन ला पता नइ हे कि छत्तीसगढ़ी राजभाषा होगे हे। दुसरा कारन ये हे कि स्कूल मन म छत्तीसगढ़ी म पढ़ाई नइ होवय, लइका मन बोलना तो जानथें, फेर पढ़ना-लिखना नइ सीख पाथें। तीसरा अऊ सबले महत्वपूर्ण कारन शासन-प्रशासन के इच्छासक्ति के कमी हे। जब तक सरकार गंभीर नइ होहि, तब तक राजभाषा सिरिफ कागजात तक सीमित रहहि।

पत्रकार : आप मन लगातार पदयात्रा अऊ साइकिल यात्रा करे हवँव। एखर का असर देखे बर मिलिस?

नंदकिशोर शुक्ल : मंय लगभग चार हजार किलोमीटर साइकिल यात्रा करे हवँव। गाँव मन म मनखे मन के भरपुर समर्थन मिलिस। लइका मन अपन मातृभाषा म पढ़ना चाहथें, फेर समाज म ये भ्रम फैला दिए गए हे कि छत्तीसगढ़ी पढ़े ले करियर खराब हो जाहि। जबकि पूरी दुनिया म मातृभाषा म सिच्छा ला सबले सुग्घर माने जाथे। ए भ्रम ला दूर करना जरूरी हे।

पत्रकार: अगर सरकारी कामकाज पूरी तरह छत्तीसगढ़ी म होए लगहि त का ओमन ला दिक्कत नई आहि जेमन ला हिंदी या अंग्रेजी म काम करे के आदत हवय?

नंदकिशोर शुक्ल जी : कोनो दिक्कत नइ आहि। आज हजारों किताब, साहित्य अऊ डिजिटल सामग्री छत्तीसगढ़ी म उपलब्ध हे, वेबसाइट हावय, मोबाइल म मनखे मन छत्तीसगढ़ी लिखत हावय, कमी संसाधन के नइ, इच्छा के हे, यदि सरकार ठान ले त ये पूरी तरह संभव हे।

पत्रकार : छत्तीसगढ़ म अलग-अलग बोली हावय। अइसने म कौन से छत्तीसगढ़ी के उपयोग होना चाही?

नंदकिशोर शुक्ल : हर भाषा म क्षेत्रीय बोली होथे।

मराठी, पंजाबी, उड़िया अऊ हिंदी म घलो अइसने हे। एखर समाधान मानकीकरण हे, सरकार विद्वान, भाषाविद् अऊ अलग-अलग बोली के जानकार मन ला एक ठाँव बैठा के एक मानक छत्तीसगढ़ी तैयार कर सकथे। ए सरकार के जिम्मेदारी हरय।

पत्रकार : सरकार के प्रयास ला आप मन कइसे देखथव ?

नंदकिशोर शुक्ल : सरकार ह तभे राज काम करथे जब जनता दबाव बनाथे। फिलहाल जनदबाव पर्याप्त नइ हे। पहिली के तुलना म वातावरण जरूर बदले हे, फेर गति बहुत मंद हावय। अभी घलो कानून म छत्तीसगढ़ ला हिंदी भाषी राज्य माने जाथे। जब तक एला आधिकारिक रूप ले 'छत्तीसगढ़ी भाषी राज्य' के दरजा नइ मिलहि, तब तक शिक्षा अऊ प्रशासन म अपेक्षित बदलाव नइ आहि।

पत्रकार : अवइया समय के का रणनीति हे?

नंदकिशोर शुक्ल : छत्तीसगढ़ी भाखा रंगमंच के जऊन अभी के युवा सहयोगी हावंय, ओमन एला आगे बढ़ाए बर लगातार काम करत हावंय। जगह-जगह जाके नाटक-मंचन करे जाथे अऊ लोगन ला अपन भाखा के महत्ता बर जागरूक करे जाथे। जियादा उम्र हो जाए के सेती में हर शारीरिक रूप ले अभी उतने सक्षम नइ हव, लेकिन हमर साथी अऊ युवा मन लगातार ये भाखा के सेवा बर आगे आवत हावंय अऊ बात-चीत घलो होवत रहिथे।

नारी सशक्तिकरण, किसान समृद्धि और डिजिटल गवर्नेंस के नए कीर्तिमान गढ़ रहा छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ में महिला सशक्तिकरण विकास, सुरक्षा और आत्मनिर्भरता की नई उड़ान

किसी भी राज्य के विकास की असली पहचान वहां की महिलाओं की सामाजिक स्थिति, आर्थिक भागीदारी और निर्णय प्रक्रिया में उनकी सहभागिता से होती है। जब महिलाएं आत्मनिर्भर बनती हैं, तो परिवार सशक्त होता है और समाज प्रगतिशील बनता है। इसी दृष्टिकोण के साथ, छत्तीसगढ़ सरकार ने महिला सशक्तिकरण को सुशासन का प्रमुख आधार बनाया है। वर्ष 2026 को 'महतारी गौरव वर्ष' के रूप में मनाते हुए महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा, स्वास्थ्य और शिक्षा के लिए कई ऐतिहासिक कदम उठाए गए हैं।

नेतृत्व और प्रमुख योजनाएं

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व और महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े के मार्गदर्शन में चल रही योजनाएं लाखों महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। राज्य सरकार की सबसे महत्वपूर्ण पहल 'महतारी वंदन योजना' महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता का एक मजबूत माध्यम बन चुकी है।

महतारी वंदन योजना: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 1 मार्च 2024 को शुरू की गई इस योजना के तहत अब तक 67 लाख 20 हजार 125 महिलाओं को हर महीने 1,000 रुपये सीधे उनके बैंक खातों में दिए जा रहे हैं। योजना के तहत 30वीं किस्त तक 19,444.33 करोड़ रुपये से अधिक की राशि बांटी जा चुकी है। 2026-27 के बजट में इसके लिए 8,200 करोड़ रुपये का प्रावधान है।

बेटियों और माताओं का सुरक्षित भविष्य

रानी दुर्गावती योजना: बालिकाओं के 18 वर्ष पूर्ण होने पर 1 लाख 50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता दी जाएगी (बजट प्रावधान: 15 करोड़ रुपये)।

• **अन्य योजनाएं:** प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना के लिए 120 करोड़ रुपये और मिशन वात्सल्य के लिए 80 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

स्वास्थ्य, पोषण और सुरक्षित वातावरण

पोषण और आंगनबाड़ी: 2026-27 के बजट में आंगनबाड़ी संचालन के लिए 800 करोड़ रुपये, पूरक पोषण आहार के लिए 650 करोड़ रुपये और कुपोषण मुक्ति के लिए 235 करोड़ रुपये का प्रावधान है। साथ ही 500 नए आंगनबाड़ी केंद्रों के निर्माण के लिए 42 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

महतारी सदन: महिलाओं को सुरक्षित वातावरण, प्रशिक्षण और आजीविका से जोड़ने के लिए प्रदेश में 'महतारी सदन' बनाए जा रहे हैं। अब तक 137 का निर्माण पूरा हो चुका है और 2026-27 में 250 नए सदनों के लिए 75 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

सखी वन-स्टॉप सेंटर: महिला सुरक्षा के लिए सभी 33 जिलों में 34 सेंटर संचालित हैं। छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य है जिसने इन सेंटरों के लिए डिजिटल एसओपी लागू की है। महिला हेल्पलाइन 181 और आपातकालीन सेवा 112 भी प्रभावी रूप से काम कर रही हैं।

आर्थिक प्रगति और स्वरोजगार

यूनिटी मॉल: महिला स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों को राष्ट्रीय बाजार उपलब्ध कराने के लिए 200 करोड़ रुपये की लागत से यूनिटी मॉल का निर्माण हो रहा है।

लखपति दीदी और बिहान मिशन: 'बिहान मिशन' के तहत 2.92 लाख समूहों से 31.65 लाख महिलाएं जुड़ी हैं। लखपति दीदी लक्ष्य के तहत छत्तीसगढ़ ने 10 लाख 43 हजार से अधिक लखपति दीदी तैयार कर ली हैं।

सम्मान और भ्रमण: उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को 'युवा रत्न सम्मान' और सफल उद्यमियों को 'लखपति दीदी भ्रमण योजना' के तहत देश-विदेश के अध्ययन का अवसर मिलेगा।

श्रमिक महिलाओं और छात्राओं के लिए सहायता

आर्थिक सहायता: मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण योजना (20 हजार रुपये), सिलाई मशीन सहायता (7,900 रुपये), दीदी ई-रिक्शा अनुदान और मिनीमाता महतारी जतन योजना (गर्भवती श्रमिकों को 20 हजार रुपये) जैसी योजनाएं चलाई जा रही हैं।

विवाह और ऋण: मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत 24 हजार से अधिक विवाह कराए गए हैं (50 हजार रुपये प्रति जोड़ा)। महतारी शक्ति ऋण योजना में बिना जमानत 25 हजार रुपये तक का स्वरोजगार ऋण और महिला समृद्धि योजना में समूहों को रियायती ऋण दिया जा रहा है।

अन्य लाभ: प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना से 38 लाख से अधिक महिलाएं लाभान्वित हुई हैं, और सुशिक्षा योजना के तहत 2 लाख 18 हजार से अधिक छात्राओं को प्रतिमाह 500 रुपये दिए जा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ में सेवा सेतु का कमाल

अब घर बैठे एक क्लिक पर मिलेंगी 520 से ज्यादा सरकारी सेवाएं

छत्तीसगढ़ शासन ने प्रशासनिक सेवाओं को अधिक सरल, पारदर्शी और जनसुलभ बनाने के लिए 'सेवा सेतु' पोर्टल की शुरुआत की है। यह एक ऐसा प्रभावी डिजिटल माध्यम है, जो 'जनता के द्वार, डिजिटल सरकार' की अवधारणा को साकार कर रहा है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार डिजिटल गवर्नेंस को लगातार मजबूत कर रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'डिजिटल इंडिया' विजन के तहत इस पोर्टल से नागरिकों को अधिकांश शासकीय सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध कराई जा रही हैं।

ई-डिस्ट्रिक्ट से 'सेवा सेतु' तक का सफर

पहले राज्य में ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल के माध्यम से केवल 86 शासकीय सेवाएं मिलती थीं। समय और नागरिकों की जरूरतों को देखते हुए इसे 'सेवा सेतु' के रूप में विकसित किया गया है। आज यह पोर्टल 36 विभागों की 520 से अधिक सेवाओं का एक एकीकृत डिजिटल मंच बन चुका है। अब नागरिकों को अलग-अलग विभागों के चक्कर नहीं लगाने पड़ते। आवेदन से लेकर ट्रैकिंग और सेवा प्राप्ति तक की पूरी प्रक्रिया पारदर्शी और समयबद्ध हो गई है।

ग्राम पंचायतों तक डिजिटल सेवाओं की पहुँच

'सेवा सेतु' की पहुंच प्रदेश के अंतिम व्यक्ति तक सुनिश्चित करने के लिए इसे ग्राम पंचायत स्तर तक ले जाया जा रहा है। इसके लिए पंचायत सचिवों, केंद्र संचालकों और विभागीय कर्मचारियों को चरणबद्ध प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को भी डिजिटल सेवाओं का समान लाभ देना और सरकारी योजनाओं का प्रभावी प्रचार-प्रसार करना है।

सेवा सेतु की उल्लेखनीय उपलब्धियां

इस पोर्टल ने बहुत कम समय में एक विश्वसनीय और पारदर्शी मंच के रूप में अपनी जगह बनाई है:

- 36 विभागों की 520 से अधिक शासकीय सेवाएं एक ही मंच पर ऑनलाइन उपलब्ध।
- अब तक 39 लाख से अधिक आवेदन प्राप्त।
- 95.9 प्रतिशत आवेदनों का सफलतापूर्वक निराकरण।
- नागरिकों की सुविधा के लिए प्रदेश भर में
- 16,700 से अधिक सेवा केंद्र संचालित।

घर बैठे इन प्रमुख शासकीय सेवाओं का उठाएं लाभ

इस पोर्टल के जरिए नागरिक अपने मोबाइल, लैपटॉप या कंप्यूटर से घर बैठे ही आवेदन कर सकते है। इससे समय और धन की बचत के साथ-साथ जवाबदेही भी बढ़ी है। पोर्टल पर मिलने वाली प्रमुख नागरिक सेवाओं में शामिल है-

- जाति, आय और निवास प्रमाण पत्र
- विवाह प्रमाण पत्र
- राशन कार्ड संबंधी सेवाएं
- पेंशन योजनाएं
- नाम परिवर्तन सेवा
- व्यापार लाइसेंस व अन्य नागरिक सेवाएं

पोर्टल पर उपलब्ध 520 सेवाओं का श्रेणीवार विवरण

- व्यवसाय, उद्योग एवं वाणिज्यिक सेवाएं - 106
- लाइसेंस, परमिट एवं विनियामक सेवाएं - 85
- सामाजिक कल्याण, पेंशन एवं वित्तीय सहायता सेवाएं - 65
- शिक्षा, छात्रवृत्ति एवं शैक्षणिक सेवाएं - 58
- भूमि, संपत्ति एवं राजस्व सेवाएं - 37
- व्यक्तिगत पहचान एवं प्रमाण पत्र सेवाएं - 35
- शासकीय अनुमोदन, अनापत्ति प्रमाण पत्र एवं स्वीकृति सेवाएं - 31
- जन शिकायत, सुरक्षा एवं विधिक सेवाएं - 25
- रोजगार, कौशल एवं श्रम सेवाएं - 19
- केंद्र सरकार की सेवा - 19
- भुगतान, कर एवं वित्तीय लेनदेन सेवाएं - 18

पारंपरिक खेती छोड़ उद्यानिकी की ओर बढ़े किसान

ऑयल पाम और स्ट्रॉबेरी से अनारथ साय ने पेश की मिसाल

जशपुर। धान की पारंपरिक खेती के अलावा अन्य कृषि विकल्पों को अपनाने की सरकारी मुहिम का जशपुर में सकारात्मक असर दिखने लगा है। जिले के ग्राम पतराटोली के किसान अनारथ साय संरक्षित खेती और आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल कर आर्थिक रूप से मजबूत हुए हैं। वे अब ऑयल पाम से लेकर स्ट्रॉबेरी तक की व्यावसायिक खेती कर क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए एक उदाहरण बन गए हैं।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में किसानों को नकदी और उद्यानिकी फसलों के लिए लगातार प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसी के तहत अनारथ ने कृषि के पारंपरिक तरीकों से आगे बढ़ते हुए उद्यानिकी और प्रक्षेत्र वानिकी का रुख किया।

शेडनेट हाउस और अनुदान का मिला लाभ

उद्यानिकी विभाग की योजनाओं का लाभ उठाते हुए अनारथ ने राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत ऑयल पाम की खेती शुरू की है। इसके साथ ही, उन्होंने 1 एकड़ में शेडनेट हाउस स्थापित कर संरक्षित वातावरण में ग्राफ्टेड टमाटर की आधुनिक खेती भी अपनाई है। इस शेडनेट हाउस के निर्माण में कुल 28 लाख 40 हजार रुपये की लागत आई, जिसमें उद्यानिकी विभाग की ओर से उन्हें 14 लाख 20 हजार रुपये का सीधा अनुदान दिया गया।

इंटरक्रॉपिंग (अंतरवर्ती खेती) से सालभर हो रही कमाई

समेकित उद्यानिकी विकास योजना के तहत अनारथ ने 2 हेक्टेयर क्षेत्र में आम और लीची का बगीचा लगाया है। उन्होंने इस बगीचे में मुख्य फसलों के बीच की खाली जगह का बेहतरीन सदुपयोग करते हुए इंटरक्रॉपिंग (अंतरवर्ती खेती) मॉडल अपनाया है। इस खाली जगह पर वे स्ट्रॉबेरी, टमाटर और फूलगोभी जैसी फसलें उगा रहे हैं।

इस एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाकर अनारथ साय कम लागत में सालभर निरंतर आय प्राप्त कर रहे हैं। खेती की यह आधुनिक और सुनियोजित तकनीक अब जिले के अन्य किसानों को भी उद्यानिकी की तरफ कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित कर रही है।

कूकरी चोर अंडा चोर से लेकर लपरहा नंबर डेढ़ तक; रंगमंच को ही अपनी ज़िंदगी मानने वाले कॉमेडी किंग रामू यादव का अनसुना सफ़र

आरती बेनिया
संवाददाता,रायपुर

जब भी वे स्टेज पर आते थे, तो उदास चेहरों पर भी खिलखिलाहट तैर जाती थी। उनके मुंह से निकला एक-एक छत्तीसगढ़ी शब्द दर्शकों को लोटपोट कर देता था। लेकिन आज, सबको हंसाने वाला वो कलाकार हमेशा के लिए शांत हो गया है। छत्तीसगढ़ी कॉमेडी के वो चमकते सितारे, जिन्होंने अपनी बेजोड़ एक्टिंग से लोगों को हर दुख में मुस्कुराना सिखाया- प्रसिद्ध हास्य कलाकार रामू यादव, अब सिर्फ यादों में रह गए हैं। 15 जुलाई 2026 की रात छत्तीसगढ़ के कला जगत के लिए एक ऐसा सन्नाटा छोड़ गई, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

रामू यादव जी छत्तीसगढ़ के उन गिने-चुने कलाकारों में से थे, जिन्होंने किसी सरकारी नौकरी या बंधी-बंधाई सैलरी के पीछे भागने के बजाय अपनी कला को ही अपना पूरा जीवन दे दिया था। वे पूरे समय सिर्फ एक कलाकार, गायक, लेखक और रंगकर्मी के रूप में ही जिए। उनका जन्म साल 1968 में बिलासपुर के एक छोटे से गांव छन्नौता (छतौना) में हुआ था, लेकिन आगे चलकर उन्होंने राजनांदगांव के पुराना ढाबा (चिखली) इलाके को अपना घर बनाया।

उन्होंने किसी बड़े स्कूल से एक्टिंग नहीं सीखी थी, बल्कि उनका पूरा जीवन ही छत्तीसगढ़ी लोककला और अभिनय के लिए था। वे दिन-रात सिर्फ इसी बात की तैयारी करते थे कि छत्तीसगढ़ के सीधे-साधे लोगों को अपनी कहानियों और एक्टिंग से कैसे खुश रखा जाए।

दूजे निषाद के साथ वो सुपरहिट जोड़ी और यादगार नाटक छत्तीसगढ़ी हास्य कला के बड़े नाम दूजे निषाद के साथ रामू यादव की जोड़ी ऐसी जमी कि इतिहास बन गई। इन दोनों की जोड़ी के बिना उस दौर में छत्तीसगढ़ी मनोरंजन की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। दूजे निषाद के साथ मिलकर उन्होंने जो नाटक और वीडियो बनाए, उनकी यादें आज भी लोगों के दिलों में ताज़ा हैं:

कूकरी चोर अंडा चोर : रामू यादव और दूजे निषाद की यह ऐसी मजेदार और सुपरहिट कॉमेडी थी, जिसे देखकर आज भी लोग हंसते-हंसते थक जाते हैं। इस नाटक के बातचीत के अंदाज ने कमाल कर दिया था।

लपरहा नंबर डेढ़ : स्कूल के दिनों की शरारतों और गांव के माहौल पर बना यह नाटक इतना मशहूर हुआ कि रामू यादव रातों-रात हर घर के चहेते बन गए।

ढोल ढोल के नारा : दूजे निषाद के साथ मिलकर बनाई गई यह उनकी सबसे हिट और यादगार कॉमेडी फिल्म है, जिसके डायलॉग आज भी लोग आपस में मजाक करते हुए बोलते हैं।

चेप्टी के कमाल : यह रामू जी की एक और ऐसी बेहतरीन प्रस्तुति थी, जिसने यह साबित कर दिया कि बिना किसी फूहड़पन के भी लोगों को पेट पकड़कर हंसाया जा सकता है।

इनके अलावा **तीन बेटी एक दमाद** और **टूरी के चक्कर** जैसे पारिवारिक नाटकों में भी उनकी एक्टिंग बहुत लाजवाब थी।

वे अपनी बातचीत में ठेठ छत्तीसगढ़ी बोली की मिठास और गांव के हाव-भाव का इतना सुंदर इस्तेमाल करते थे कि हर आम इंसान को लगता था कि यह तो उनके ही आसपास की कहानी है।

आख़िरी सफ़र...

सबको खुशियां बांटने वाले इस कलाकार का आख़िरी सफर सबको रुला गया। 58 साल की उम्र में रामू यादव जी को अचानक आए हार्ट अटैक (दिल का दौरा) ने कला जगत से हमेशा के लिए छीन लिया। जब राजनांदगांव में उनकी अंतिम यात्रा निकली, तो जो लोग कल तक उनके चुटकुलों पर ठहाके मार रहे थे, वे फूट-फूटकर रो रहे थे।

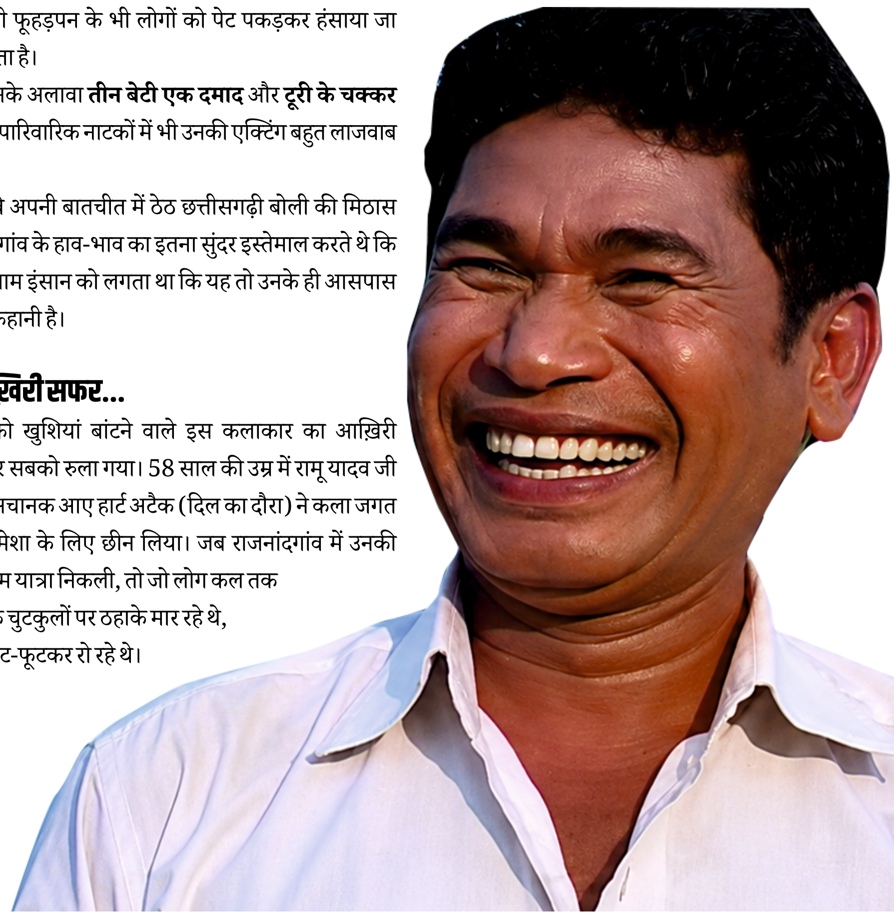

मंच पर बैठते ही जो बिखेर देते थे छत्तीसगढ़िया संस्कृति का जादू

आजकल जब छत्तीसगढ़ी गानों में तेज डीजे और रीमिक्स का शोर बहुत बढ़ गया है, तब लोक संगीत की असली मिठास गायब होती दिखती है। लेकिन मुंगेली के एक सच्चे माटीपुत्र ने आख़िरी समय तक हमारे पारंपरिक गीतों की शुद्धता को बचा कर रखा। वे जब भी स्टेज पर हारमोनियम लेकर बैठते थे, तो उनकी आवाज़ सीधे लोगों के दिलों को छू लेती थी। वे नाम था- प्रेम आनंद चौहान। छत्तीसगढ़ के गांवों से लेकर शहरों तक अपनी जादुई आवाज़ बिखेरने वाले 'मुंगेली वाले चौहान जी' आज भले ही इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनकी सुरीली तान हमेशा अमर रहेगी।

मुंगेली की मिट्टी से जुड़ा रहा पूरा जीवन

प्रेम आनंद चौहान जी का जन्म और पूरा जीवन मुंगेली जिले की पावन धरती पर बीता। उन्होंने संगीत को कभी व्यापार नहीं माना, बल्कि इसे अपनी छत्तीसगढ़ी संस्कृति की सेवा का माध्यम बनाया। बचपन से ही संगीत के प्रति उनका गहरा लगाव था। उन्होंने छत्तीसगढ़ के त्योहारों, खेतों की हरियाली और यहां के सीधे-साधे जनजीवन को बहुत करीब से देखा और उसी अनुभव को अपने गीतों में पिरोया। यही वजह थी कि लोग उन्हें आदर के साथ 'मुंगेली वाले चौहान जी' कहकर बुलाते थे।

मुंगेली के शक्ति माई और अन्य लोकप्रिय गीत

चौहान जी के गाए जसगीत और लोकगीत छत्तीसगढ़ के कोने-कोने में बहुत प्रसिद्ध हुए। लोग आज भी उनके गानों को बड़े चाव से सुनते हैं:

मुंगेली के शक्ति माई उनका सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध जसगीत है, जो नवरात्रि और धार्मिक आयोजनों में हर मंदिर और पंडाल में गूंजता है। मया के अमृत धार, इस लोकगीत में उन्होंने छत्तीसगढ़ी प्रेम और संस्कृति को बहुत ही सुंदर ढंग से पेश किया है। माटी के सिंगार, इस गीत के जरिए उन्होंने छत्तीसगढ़ की धरती और खेतों की सुंदरता का सजीव वर्णन किया था।उन्होंने कभी भी अपने गानों में फूहड़पन को जगह नहीं दी। उनकी एक आवाज़ पर मंच कार्यक्रमों में हजारों की भीड़ उमड़ पड़ती थी।

आख़िरी सांस तक संगीत की सेवा

उम्र बढ़ने के साथ चौहान जी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझ रहे थे, लेकिन संगीत के प्रति उनका लगाव कभी कम नहीं हुआ। आख़िरी समय तक वे नई धुनें बनाने और युवा कलाकारों को सिखाने में लगे रहे। उनकी अचानक विदाई से छत्तीसगढ़ के लोक संगीत को एक बड़ा झटका लगा। भले ही वे आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन जब-जब छत्तीसगढ़ की धरती पर पारंपरिक लोकगीत और जसगीत गाए जाएंगे, उनकी याद हमेशा ताज़ा रहेगी। 'पुरखा के सुरता' कॉलम में इस महान लोकगायक को श्रद्धांजलि।

19 साल के इन लड़कों ने संभाली पुरखों की विरासत पुराना टीन-डब्बा बजाकर सीखी लोक कला

डीजे के इस दौर में लोक संगीत का जादू महासमुंद के रहने वाले इन 18-19 साल के लड़कों की सादगी और इनका हुनर देखकर आज पूरा छत्तीसगढ़ हैरान है। जब यह युवा टोली अपनी सुरीली आवाज़ और वाद्य यंत्रों के साथ बैठती है, तो पारंपरिक लोक संगीत का एक ऐसा जादू बिखरता है कि सुनने वाला झूमने पर मजबूर हो जाता है। इस टोली में खुशाल साहू, गौतम कुमार देवांगन, प्रहलाद साहू, अखिलेश साहू और कुंदन कुमार साहू शामिल हैं, जो आपस में बहुत गहरे दोस्त हैं।

जब इन बच्चों से पूछा गया कि आज के दौर में जहां बाकी युवा डीजे और लाउड म्यूजिक पर नाचना पसंद करते हैं, वहां उन्होंने इस पारंपरिक लोक संगीत को क्यों चुना? तो खुशाल और उनके साथियों ने बहुत ही सहजता से जवाब दिया कि उनके लिए संगीत की यह दुनिया सबसे बेस्ट है ़ उन्होंने कहा कि डीजे का अपना एक अलग मज़ा हो सकता है, लेकिन हमारी छत्तीसगढ़ी माटी के लोक संगीत और पुरखों के गानों के सामने डीजे का शोर कुछ भी नहीं है उनका लक्ष्य सिर्फ इतना है कि जो पुराने गीत लोग धीरे-धीरे भूलते जा रहे हैं, उन्हें एक नए और खूबसूरत अंदाज में आज की पीढ़ी के सामने लाया जाए I

जब मम्मी से पड़ती थी डांट और गुस्सा

इस मुकाम तक पहुंचने के लिए इन लड़कों ने किसी बड़े शहर में जाकर कोई महंगी म्यूजिक क्लास नहीं ली है और न ही इनका कोई औपचारिक गुरु है बचपन में उनके गांवों में जो रामायण मंडली और झांकियां निकलती थीं, ये लड़के उन्हें ही बहुत ध्यान से देखते थे और वहीं से इनके मन में संगीत का शौक जागा, तबला वादक गौतम देवांगन और पैड बजाने वाले प्रहलाद ने बताया कि शुरुआत में उनके पास कोई महंगे वाद्य यंत्र नहीं थे। बचपन में जब भी घर में मौका मिलता, वे पुराने टीन-डब्बे, पीपा और पीतल के बर्तन लेकर ही बजाने बैठ जाते थे कई बार तो बर्तन खराब होने के डर से घर में मम्मी-पापा से डांट और गुस्सा भी झेलना पड़ता था कि 'बर्तन क्यों बजा रहे हो' उनके एक साथी ने तो एक बार किसी महोत्सव में फटे हुए पैड कवर पर गत्ता और कपड़ा लपेटकर उस पर हाथ चलाना सीखा था, बच्चों की इस दीवानगी और कड़ी मेहनत को देखकर बाद में परिवार वालों ने उन्हें असली वाद्य यंत्र खरीद कर दिए।

दिन भर की व्यस्तता और रात भर का रियाज़

इन बच्चों की लगन देखकर कोई भी इनका फैन हो जाए।

चूंकि सभी दोस्त अलग-अलग गांवों से आते हैं, इसलिए वे रोज साथ में प्रैक्टिस नहीं कर पाते और अपने-अपने घरों में ही मेहनत करते हैं लेकिन जब भी कोई बड़ा प्रोग्राम या इंटरव्यू होता है, तो ये सब एक जगह इकट्ठा होते हैं।

ठीहा छत्तीसगढ़ के इंटरव्यू की तैयारी के लिए भी इन लड़कों ने दिन भर की अपनी व्यस्तताओं से खाली होने के बाद रात भर जागकर लगातार प्रैक्टिस की ताकि दर्शकों को कुछ बहुत बेहतरीन सुना सकें बातचीत के बीच में जब उन्होंने अपनी सुरीली आवाज़ में माता का प्रसिद्ध जसगीत **घाटा रानी घाटा मा बैठे वो, दाई घाटा मा बिरा... जगमगा दिया दाई चारो मुड़ा मा डोर वो...** गाना शुरू किया, तो मानो पूरा माहौल भक्ति के रंग में डूब गया.

इसके बाद उन्होंने सावन का पारंपरिक गीत **सावन महीना घटा घन मोरी जिंदगी मा कर दे मुर जवारा** और सोशल मीडिया पर धूम मचाने वाला अपना सबसे लोकप्रिय गाना **हे भौजी मोरे करा दे दाई दादा मोर मना ले** भी सुनाया. इन गानों को गाते समय इन युवाओं का कला के प्रति पूरा समर्पण भाव उनके चेहरे पर साफ दिखाई दे रहा था।

पढ़ाई भी और संगीत का सपना भी

इन उभरते सितारों ने बताया कि वे पढ़ाई और संगीत दोनों को बराबर समय दे रहे हैं। टोली का एक साथी जहां कॉलेज में अपनी आगे की पढ़ाई कर रहा है, वहीं तबला बजाने वाले गौतम देवांगन खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय से बकायदा तबला का कोर्स कर रहे हैं. उनका सपना है कि आगे चलकर वे एक तबला क्लास खोलें और दूसरों को भी यह पारंपरिक कला सिखा सकें।

इन नन्हे कलाकारों की सादगी और उनकी यह सोच दिल को छू लेती है कि जब तक हमारे छत्तीसगढ़ में ऐसे हुनरमंद और अपनी संस्कृति से प्यार करने वाले युवा हैं, तब तक हमारी लोक कला और भाषा की मिठास कभी खत्म नहीं हो सकती लेखिका आरती बेनिया की ओर से महासमुंद के इन होनहार बच्चों को उनके आने वाले कल के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं

सुरों के सुनहरे सफ़र के साथ आज भी छत्तीसगढ़ी संस्कृति को सहेज रही- सीमा कौशिक

आरती बेनिया
संवाददाता,रायपुर

रायपुर 90 के दशक का वो सादगी भरा 'गोल्डन एरा' जब न हाथ में स्मार्टफोन था, न इंस्टाग्राम रील्स का शोर और न ही चेहरों पर फिल्टर की बनावट। उस दौर में पूरे छत्तीसगढ़ के कोने-कोने, हर शादी और हर घर में एक आवाज़ गूंजती थी- 'टूरा नई जाने रे... टूरा नई जाने'। इस ब्लॉकबस्टर लोकगीत से घर-घर में अपनी पहचान बनाने वाली सुप्रसिद्ध लोक गायिका सीमा कौशिक आज भी उतनी ही सादगी और बेबाकी से अपनी जिंदगी जी रही हैं। 'ठीहा छत्तीसगढ़ न्यूज़' ने उनके फार्म हाउस पर पहुंचकर उनसे एक विशेष मुलाकात की, जहाँ उन्होंने आज की म्यूज़िक इंडस्ट्री के गिरते स्तर, कलाकारों की आपसी फूट और छत्तीसगढ़ी संस्कृति के डूबते भविष्य पर कई आंखें खोल देने वाले राज़ उजागर किए।

छेड़खानी की घटना और उपजा छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा ब्लॉकबस्टर गीत

इंटरव्यू के दौरान सीमा कौशिक जी ने उस ऐतिहासिक गाने 'टूरा नई जाने रे' के बनने की जो कहानी सुनाई, वह हैरान करने वाली है। उन्होंने पुरानी यादें ताज़ा करते हुए बताया, "हम लोग एक प्रोग्राम से लौट रहे थे। उस दौरान हमारे साथ कुछ लड़कियां भी थीं। रास्ते में कुछ लड़के उन लड़कियों को तंग कर रहे थे, उनके साथ छेड़खानी कर रहे थे। लड़कों की उस बदतमीजी और छेड़खानी को देखकर मेरे भीतर का गुस्सा जागा। मैंने तुरंत-तुरंत मौके पर ही उन लड़कों को सबक सिखाने के लिए वो लाइनें लिखीं और गाना तैयार किया।" किसी ने नहीं सोचा था कि रास्ते की एक कड़वी घटना से उपजा यह गाना पूरे छत्तीसगढ़ की संगीत विरासत का सबसे बड़ा इतिहास बन जाएगा।

स्टेज पर बैठकर गाने की मर्यादा बनाम खड़े होकर बदन दिखाने की होड़

सीमा जी ने पुराने और नए कलाकारों के बीच के अंतर और मर्यादा को साफ करते हुए कहा, हमारे समय के जो कलाकार थे, वे मंच पर बैठकर पूरी शालीनता और सम्मान के साथ सुर साधते थे। लेकिन आज के कलाकार खड़े होकर सिर्फ उछल-कूद और दिखावा कर रहे हैं।

ड्रेसिंग सेंस पर तीखा प्रहार करते हुए उन्होंने कहा, "हमारे समय में अगर मंच पर डांस करते हुए कभी थोड़ी सी कमर भी दिख जाती थी, तो कलाकार तुरंत उसे कपड़े या चुन्नी से ढकते थे और फिर परफॉर्मेंस जारी रखते थे। लेकिन आज के समय में लोग बदन दिखाना चाहते हैं।"उन्होंने आगे कहा, "आजकल की लड़कियां जानबूझकर बेहद डीप ब्लाउज पहन रही हैं। साड़ी पहनने का तरीका इस कदर बदल दिया गया है कि वह और ज़्यादा खुली और कटी-फटी दिखती है। आज के लोग इसीलिए ये सब देख रहे हैं क्योंकि कुछ कलाकार खुद होकर बदन दिखा रहे हैं और लोगों को ये परोसा जा रहा है।

इलेक्ट्रॉनिक मशीनों ने छीना छत्तीसगढ़ी वाद्ययंत्रों का वजूद पुराने समय के स्टेज और आज के तड़क-भड़क वाले लाइव शोज की तुलना करते हुए सीमा जी बहुत भावुक हो गईं। उन्होंने पुराने दिनों की यादें साझा करते हुए बताया, "हमारे समय में आज की तरह आधुनिक मशीनें, क्रेन या विशालकाय मंच नहीं होते थे। छोटे-छोटे स्टेज होते थे, जिन पर छोटी-छोटी रंग-बिरंगी कलरफुल लाइटें लगी होती थीं। मंच पर आज की तरह तामझाम नहीं, बल्कि बेहद सीमित वाद्ययंत्र होते थे- सिर्फ एक बेंजो, तबला, ढोलक, हारमोनियम और हमारी छत्तीसगढ़ी संस्कृति की असली पहचान 'मोहरी' (शहनाई जैसा पारंपरिक वाद्य) बजती थी। उन गिने-चुने इंस्ट्रूमेंट्स और सादगी भरे मंच के पीछे कलाकारों की असली साधना होती थी, जो दर्शकों के दिलों को छू लेती थी। आज के समय में विशालकाय मंच हैं, बड़े-बड़े साउंड बॉक्स हैं, कान फोड़ने वाले डीजे हैं और पुराने वाद्यों की जगह ऑक्टापैड व इलेक्ट्रॉनिक सिंथेसाइज़र ने ले ली है। आज हमारी पारंपरिक मोहरी गायब हो चुकी है। मंच भले ही बड़े हो गए हैं, लेकिन वो पुरानी सादगी, मिठास और असली सुर इस मशीनी शोर में कहीं खो गए हैं।

गानों में डबल मीनिंग का चलन, बिना स्क्रिप्ट और लिरिक्स देखे कुछ भी गा रही आज की पीढ़ी

आज के दौर के संगीत और रिकॉर्डिंग के तौर-तरीकों पर सीमा जी ने एक बड़ा कड़वा सच उजागर किया। उन्होंने बताया, "आजकल के गानों की सबसे बड़ी समस्या यह है कि हर गाने का डबल मीनिंग (द्विअर्थी/अश्लील शब्द) होता है। लोग जानबूझकर ऐसे ही गाने बना रहे हैं।"

उन्होंने अपने सिद्धांतों की तुलना आज के शॉर्टकट कल्चर से करते हुए कहा, "हमारे समय में यह नियम था और मैं आज भी इस पर डटी हूँ कि जब भी कोई नया कंपोज़र मुझे गाना गाने के लिए कहता है, तो मैं साफ़ कहती हूँ कि पहले मुझे स्क्रिप्ट दिखाइए, पूरा लिरिक्स बताइए, मुझसे आकर मिलिए। लेकिन आज की पीढ़ी के पास इतना समय ही नहीं है कि वे बैठकर स्क्रिप्ट दिखाएं। नतीजा यह होता है कि वे हमारे पास आने के बजाय दूसरे सिंगर्स के पास स्विच कर जाते हैं। आज के नए कलाकार इतने लापरवाह हैं कि फोन पर ही पूरी बात फाइनल कर लेते हैं। बिना एक भी शब्द देखे या जांचे, वे फोन पर ही हां बोल देते हैं और किसी भी तरह के फूहड़ और अश्लील गानों को गाने के लिए तुरंत रेडी हो जाते हैं। हमारे समय में गानों के एक-एक शब्द को परखा जाता था, लेकिन आज कुछ भी गाया जा रहा है।"

सीमा कौशिक जी ने छत्तीसगढ़ राज्योत्सव जैसे बड़े सांस्कृतिक मंचों पर पुराने और वरिष्ठ कलाकारों की उपेक्षा को लेकर सीधे सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने बेहद तल्ख लहजे में कहा, "जिन पुराने कलाकारों ने छत्तीसगढ़ी संस्कृति को शुरुआती दौर से सींचकर आज इस मुकाम तक पहुँचाया है, उन्हें राज्योत्सव जैसे प्रतिष्ठित मंचों से गायब कर दिया गया है। आज हम उस दौर के स्थापित कलाकार हैं, लेकिन हमें प्राथमिकता देना तो दूर, वहाँ प्रोग्राम करने के लिए हमसे आवेदन माँगा जाता है।"

उन्होंने गुस्से में सवाल उठाते हुए कहा, "क्या आज हम इस स्थिति में आ गए हैं कि हम खुद आवेदन लिखकर दें कि 'हमारा प्रोग्राम लीजिए और हमें गाने बुलाइए'? क्या सरकार और संस्कृति विभाग की यह ज़िम्मेदारी नहीं बनती कि वे खुद हमें याद करें और सम्मानपूर्वक न्योता देकर आमंत्रित करें? खुद अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए लेटर लिखना, हमारी कला का सीधा अपमान है।"

बाहरी कलाकारों पर लाखों की बौछार, छत्तीसगढ़ियों को कौड़ियों के भाव

छत्तीसगढ़ी कलाकारों की कीमत और उनके सम्मान को लेकर सीमा जी का दर्द साफ झलका। उन्होंने भेदभाव का आरोप लगाते हुए कहा, "बाहर से (मुंबई या अन्य राज्यों से) कलाकारों को बुलाकर यहाँ बड़े-बड़े प्रोग्राम कराए जाते हैं। उन्हें लाखों-लाख रुपये की भारी-भरकम फीस दी जाती है, उन्हें वीआईपी न्योता भेजा जाता है। लेकिन जब छत्तीसगढ़ की माटी के अपने कलाकारों की बात आती है, तो हमें कम से कम पैसों में आंका जाता है। अगर कोई स्थानीय कलाकार अपने हक के सही पैसों की डिमांड कर दे, तो विभाग उसे बुलाना ही बंद कर देता है। बाहरी लोगों के लिए खजाना खुला है और अपनों के लिए सिर्फ बजट का रोना!"

अगले 10 साल में खत्म हो जाएगी छत्तीसगढ़ी इंडस्ट्री ?

भविष्य की चिंताओं पर बात करते हुए सीमा जी ने एक बेहद गंभीर और डरा देने वाली चेतावनी दी। उन्होंने तल्ख लहजे में कहा, "जब छत्तीसगढ़ के कलाकारों को खुद उनके अपने छत्तीसगढ़ में मंच नहीं मिलेगा, सम्मान नहीं मिलेगा और उनकी कला की सही कीमत नहीं आंकी जाएगी, तो बाहरी राज्यों के लोग हमें क्यों बुलाएंगे ? ऐसे हमारी छत्तीसगढ़ी संस्कृति कैसे आगे बढ़ेगी? मैं सच बता रही हूँ, अगर यहाँ की व्यवस्था और कलाकारों की स्थिति ऐसी ही रही, तो आने वाले 10 सालों में छत्तीसगढ़ी म्यूज़िक इंडस्ट्री पूरी तरीके से खत्म हो जाएगी।"

छत्तीसगढ़ की पहली महिला जो बना रही मछलियों का दाना

संगीत की दुनिया से दूर सुप्रसिद्ध लोक गायिका सीमा कौशिक आज छत्तीसगढ़ की महिलाओं के लिए आत्मनिर्भर बनने की एक नई मिसाल हैं। फार्म हाउस का तालाब तो सिर्फ एक माध्यम है, लेकिन उनका मुख्य व्यवसाय 'फिश फीड' यानी मछलियों का दाना (चारा) तैयार करना है।इस काम को बड़े स्तर पर करने वाली वे छत्तीसगढ़ की पहली महिला हैं। सीमा जी का कहना है कि जैसे गाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है, वैसे ही इस बिजनेस में भी बहुत लगन और सब्र की जरूरत होती है। किसी के आगे हाथ फैलाने से अच्छा है कि अपने स्वाभिमान के साथ अपनी माटी के बीच रहकर काम किया जाए। उनका यह नया अंदाज आज हर महिला को अपने पैरों पर खड़े होने की सीख देता है।

चाय की दुकान से 'जस सम्राट' बनने तक का सफर, सादगी ही मेरी असली पूंजी- दुकालू यादव

छत्तीसगढ़ में जब भी नवरात्रि, होली या दिवाली का त्योहार आता है, तो हर घर, चौक और गली में एक ही आवाज़ गूंजती है-जस सम्राट दुकालू यादव अपनी सुरीली आवाज़ से पूरे प्रदेश को भक्ति के रस मेंडुबाने वाले दुकालू यादव जी ने अपनी जीवन यात्रा औरआज के संगीत के बदलते तौर-तरीकों पर 'ठीहा छत्तीसगढ़ न्यूज़' के पॉडकास्ट में खुलकर बहुत ही सरलशब्दों में बातचीत की।

सवाल: यादव जी, जस सम्राट बनने से पहले का आपका शुरुआती जीवन कैसा था ? आपने कहाँ से शुरुआत की थी ?

जवाब: मैं बहुत ही गरीब परिवार से हूँ हमारा बचपन रायपुर के रामसागर पारा की गलियों में बीता है । घर की स्थिति को संभालने के लिए मैंने स्कूल की छुट्टियों में होटल में चाय देने और बर्तन साफ करने का भी काम किया है। हमारा पूरा जीवन बहुत संघर्षों से गुजरा है बचपन में जब मोहल्ले में रामायण या भजन होता था, तब मैं गैस बत्ती जलाकर वहां सेवा देने जाता था । इसी तरह धीरे-धीरे मेरा संगीत से लगाव बढ़ता गया।

सवाल: उस दौर में जब साधन बहुत कम थे, तब गानों की तैयारी और रिकॉर्डिंग कैसे होती थी ?

जवाब: हमारे समय में आज की तरह कंप्यूटर या आधुनिक तकनीक नहीं थी हम मांदर और ढोलक की असली थाप पर गाते थे । उस समय लाइव रिकॉर्डिंग होती थी यानी अगर एक बार भी गाना बिगड़ी, तो पूरा गाना शुरू से फिर से गाना पड़ता था । इसी वजह से हम स्टूडियो जाने से पहले हफ्ता-हफ्ता भर और महीना भर बैठकर जमकर गानों का रियाज़ (अभ्यास) करते थे। आज के समय में तो कंप्यूटराइज दुनिया है, लोग बिना गाना जाने भी स्टूडियो चले जाते हैं

सवाल: आजकल की नई पीढ़ी के कलाकारों और गानों में आ रही फूहड़ता को लेकर आपके क्या विचार हैं?

जवाब: आज की नई पीढ़ी के कुछ कलाकार यह सोचकर पैदा होते हैं कि वे बस एक ही दिन में सीढ़ी चढ़ जाएं और रातों-रात फेमस हो जाएं । वे मेहनत करना और गुरु की सेवा करना नहीं चाहते। हमारे गुरुजी (प्रेम उस्ताद जी) ने हमें सिखाया था कि गाना लिखने से पहले शब्दों की शुद्धता बहुत ज़रूरी है । गानों में कभी भी अशुद्ध या गलत भाव वाले शब्द नहीं होने चाहिए । आज के कलाकारों को भी शॉर्टकट छोड़कर अच्छी सोच के साथ गाना बनाना चाहिए ।

सवाल: जब कलाकारों का करियर ढलान पर होता है, तो कई लोग राजनीति में चले जाते हैं। क्या आपका ऐसा कोई विचार है?

जवाब: मैं राजनीति से बहुत दूर हूँ और मेरा ऐसा कोई विचार नहीं है । मेरा जीवन सिर्फ माता रानी की सेवा और गाते-बजाते हुए निकल जाए, मैं यही चाहता हूँ । बहुत से लोग पद्मश्री जैसे पुरस्कारों के पीछे भागते हैं, लेकिन मैं फल की चिंता किए बिना सिर्फ अपना कर्म करने पर विश्वास रखता हूँ । लालसा रखने से कला का सम्मान कम होता है

सवाल: बहुत से पुराने कलाकारों की आखिरी समय में आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है। इस पर आप क्या कहेंगे?

जवाब: देखिए, सुख-दुख तो संसार का नियम है। कई बार लोग कहते हैं कि सरकार कलाकारों की मदद नहीं करती, लेकिन सरकार हर चीज का ठेका थोड़ी न लेगी, आज अगर हम चार दिन अच्छा कमा रहे हैं, तो यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने परिवार और आने वाले बुरे वक्त के लिए दो पैसा डब्बे में बचाकर रखें। आज कमाया और कल उड़ा दिया, फिर बाद में हाथ फैलाना पड़ा, तो यह कलाकार की खुद की गलती है ।

सवाल: यादव जी, आपकी पूरी टीम में कितने लोग हैं और आप एक प्रोग्राम की कितनी फीस (पैसा) लेते हैं?

जवाब: मेरी पूरी टीम में कम से कम 40 कलाकार हैं मैं बहुत ज्यादा फीस की लालच नहीं करता । मैं सिर्फ उतनी ही फीस लेता हूँ जिससे मेरे साथ जुड़े इन 40 लोगों का पेट भर जाए, माइक और गाड़ी वाले का खर्चा निकल जाए और दो पैसा मेरे पास भी बच जाए । कला के क्षेत्र में कभी घाटा भी सहना पड़ता है और कभी थोड़ा ज़्यादा भी मिल जाता है, हमें सबको मिलाकर चलना होता है

बातचीत का अंत: जस सम्राट दुकालू यादव जी से हुई यह ख़ास बातचीत हमें सिखाती है कि कला सिर्फ नाम या पैसे के लिए नहीं, बल्कि पूरी ईमानदारी और समर्पण के साथ की जाने वाली साधना है। अपनी माटी के प्रति उनका मया (प्यार) और आने वाली पीढ़ी के लिए उनका यह मार्गदर्शन आज के हर नए कलाकार के लिए एक बड़ी सीख है।

मौन हो गई महाभारत की सबसे बुलंद आवाज़ यादों में छोड़ गईं तंबूरे की आखिरी थाप

मंच पर जब वे हाथ में तंबूरा तानकर खड़ी होती थीं, तो पैर भले ही छत्तीसगढ़ की माटी पर होते थे, लेकिन उनकी गर्जना सीधे दिल्ली से लेकर पेरिस और जापान तक के शासकों के दिलों को हिला देती थी। पर इस महानायिका की शुरुआत एक ऐसी दर्दनाक घटना से हुई थी, जिसने उन्हें बचपन में ही मौत के मुहाने पर लाकर खड़ा कर दिया था।

जन्म और बचपन: जब आवारा कुत्ता उठा ले गया था छह दिन की बच्ची को...

पद्मविभूषण डॉ. तीजन बाई का जन्म 24 अप्रैल 1956 को दुर्ग जिले के ग्रामीण अंचल गनियारी गांव में एक बेहद गरीब पारधी जनजाति परिवार में हुआ था। बचपन भूख, गरीबी और घोर कुपोषण के बीच बीता। वे शारीरिक रूप से इतनी कमजोर थीं कि उनके बचने की उम्मीद न के बराबर थी। जन्म के ठीक छठवें दिन एक रूह कंपा देने वाली घटना घटी; तीजन बाई केवल 5-6 दिन की नवजात थीं, तब उनकी माँ उन्हें झोपड़ी में सुलाकर नहाने गई थीं। तभी एक कुत्ता आया और उन्हें कमर के पास से पकड़कर ले जाने लगा। माँ ने जब यह देखा तो वह जोर-जोर से चिल्लाने लगीं और आसपास के लोगों ने दौड़कर कुत्ते का पीछा किया। वहीँ कुत्ता उन्हें पास के एक पत्थर के पास छोड़ गया और भगवान की कृपा से तीजन बाई को एक खरोंच तक नहीं आई. तब जाकर तीजन को दोबारा नई जिंदगी मिली। शायद कुदरत को उनसे छत्तीसगढ़ी लोक कला का इतिहास लिखवाना था।

रूढ़ियों की जंजीरें तोड़ीं, समाज ने किया था हुक्का-पानी बंद

उस दौर में छत्तीसगढ़ी समाज और विशेषकर पारधी समाज में महिलाओं का घर से बाहर निकलना, घूंघट हटाना और पुरुषों के सामने बोलना भी वर्जित था। पंडवानी (पांडवों की वाणी) पर सिर्फ पुरुषों का एकाधिकार था। महिलाएं सिर्फ बैठकर शांत स्वभाव से 'वेदमती शैली' में गा सकती थीं। लेकिन तीजन के भीतर एक विद्रोही कलाकार छिपा था। उन्होंने अपने नाना बृजलाल पारधी से महाभारत की कहानियां सुनीं और मन ही मन थाम लिया तंबूरा।

उन्होंने खड़े होकर, कूदकर, हाथों में तंबूरे को कभी अर्जुन का धनुष तो कभी भीम की गदा बनाकर 'कापालिक शैली' में गाना शुरू किया। मात्र 12 साल की उम्र में समाज के दबाव में उनकी शादी कर दी गई। जब 13 साल की तीजन ने पास के गांव चंद्रखुरी में अपना पहला सार्वजनिक मंच प्रदर्शन दिया, तो रूढ़िवादी समाज में भूचाल आ गया। उनके पति और समाज के ठेकेदारों ने उन पर पाबंदी लगानी चाही, पर तीजन नहीं रुकीं। नतीजा यह हुआ कि समाज ने उन्हें जात से बाहर निकाल दिया और हुक्का-पानी बंद कर दिया। उन्हें घर से बेदखल कर दिया गया। तीजन ने गांव के बाहर मिट्टी की एक छोटी सी झोपड़ी बनाई, पड़ोसियों से बर्तन मांगकर खाना पकाया, लेकिन अपने तंबूरे और कला का साथ नहीं छोड़ा।

देश-दुनिया में छत्तीसगढ़ी संस्कृति की अलख जगाई

तीजन बाई ने अपनी अद्भुत कला के दम पर पुरुषों के इस गढ़ को न सिर्फ ढहाया, बल्कि पूरी दुनिया को अपनी संस्कृति का मुरीद बना दिया। महान फिल्मकार श्याम बेनेगल ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और दूरदर्शन के ऐतिहासिक धारावाहिक 'भारत एक खोज' में उन्हें मुख्य स्थान दिया। इसके बाद तीजन का तंबूरा सात समंदर पार गूंजने लगा।

उन्होंने इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, तुर्की, मॉरीशस और जापान सहित दुनिया के 17 से अधिक देशों में सैकड़ों अंतरराष्ट्रीय प्रस्तुतियां दीं। जो समाज कभी उनसे बात नहीं करता था, वह उनके विदेश जाने से पहले पैर छूकर आशीर्वाद लेने लगा। कला जगत में उनके इस अद्वितीय योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें देश के तीनों सर्वोच्च नागरिक सम्मानों- पद्म श्री (1988), पद्म भूषण (2003) और पद्म विभूषण (2019) से नवाजा। वे छत्तीसगढ़ की एकमात्र ऐसी हस्ती बनीं जिन्हें पद्मविभूषण जैसा सर्वोच्च सम्मान मिला।

बीमारी का लंबा दौर और अंतिम सांस

उम्र के आखिरी पड़ाव में इस महान कलाकार का जीवन काफी कष्टप्रद रहा। साल 2024 में वे पैरालिसिस (लकवा) की चपेट में आ गई थीं, जिसके बाद उनका चलना-फिरना और बोलना बेहद मुश्किल हो गया था। इस साल 27 मई को अचानक सांस लेने में तकलीफ और फेफड़ों में पानी भरने (निमोनिया) की शिकायत के बाद उन्हें एम्स (AIIMS) रायपुर के आईसीयू में भर्ती कराया गया। वे कई हफ्तों तक जिंदगी और मौत की जंग लड़ती रहीं। डॉक्टरों की एक विशेष टीम उन्हें बचाने का प्रयास कर रही थी, लेकिन 5 जुलाई 2026 की तड़के सुबह 3:15 बजे अचानक उनकी तबीयत ज्यादा बिगड़ गई और 70 वर्ष की आयु में इस महानायिका ने अंतिम सांस ली।

छत्तीसगढ़ के लिए बड़ी क्षति

तीजन बाई का जाना सिर्फ एक कलाकार का जाना नहीं है, बल्कि छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति के एक स्वर्णिम युग का अंत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए इसे 'कला और संस्कृति जगत के लिए एक अपूर्णनीय क्षति' बताया था। तीजन बाई छत्तीसगढ़ की वो 'चिन्हारी' (पहचान) थीं, जिन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य बनने से बहुत पहले ही इस अंचल की भाषा, पहनावे और संस्कृति को वैश्विक मंचों पर स्थापित कर दिया था। आज छत्तीसगढ़ ने अपनी माटी का सबसे अनमोल रत्न खो दिया है। उन्हें राजकीय सम्मान के साथ उनके पैतृक गांव गनियारी में अंतिम विदाई दी गई।

दादी की कला को मैं इसी तंबूरे से आगे बढ़ाऊंगा
तीजन बाई के पोता - सूरज

छॉलीवुड ने खोया अपना पहला रैपर, यादों में रह गया एप्पी राजा का वो 'कूल' अंदाज़

आमतौर पर जब भी रैप गानों की बात होती है, तो लोगों के दिमाग में बड़े-बड़े शहरों के सिंगर याद आते हैं। लेकिन छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग से निकले एक सीधे-साधे लड़के ने इस सोच को पूरी तरह बदल दिया। हाथ में माइक थामकर जब उसने ठेठ छत्तीसगढ़ी में रैप गाना शुरू किया, तो बड़े-बड़े संगीतकार भी हैरान रह गए। लेकिन अफ़सोस, बस्तर की वादियों से उठी यह अनोखी आवाज़ बहुत ही कम उम्र में हमेशा के लिए खामोश हो गई।

बस्तर की गलियों से शुरू हुआ था संगीत का जुनून

एप्पी राजा का असली नाम चेतन चांडक था। उनका जन्म कांकेर जिले के एक छोटे से कस्बे भानुप्रतापपुर में हुआ था। बस्तर जैसी जगह पर रहते हुए संगीत में कुछ अलग करने का सपना देखना आसान नहीं था। शुरुआती दिनों में उनके पास न तो कोई बड़ा स्टूडियो था और न ही कोई रास्ता दिखाने वाला। उनके जीवन में आर्थिक परेशानियां और संघर्ष भी बहुत था, लेकिन अपनी मातृभाषा छत्तीसगढ़ी को एक नया और आधुनिक रूप देने का उनके भीतर एक गजब का जुनून था। इसी जुनून के दम पर उन्होंने आगे चलकर 'एप्पी राजा' के नाम से अपनी पहचान बनाई।

टूरा भोको लोलो गाकर रातों-रात बटोरी सुर्खियां

चेतन ने जब यूट्यूब पर छत्तीसगढ़ी और हिंदी को मिलाकर रैप गाने डालने शुरू किए, तो युवाओं ने उन्हें हाथों-हाथ लिया। उनका एक गाना 'टूरा भोको लोलो' सोशल मीडिया पर ऐसा वायरल हुआ कि छत्तीसगढ़ के हर बच्चे और युवा की जुबान पर चढ़ गया। इसके बाद उन्होंने 'कका ज़िंदा हे', 'तोर सुरता' और 'छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया' जैसे कई सुपरहिट गाने दिए।

उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम और शहीद भगत सिंह पर भी रैप गाकर अपनी गहरी सोच का परिचय दिया था। उन्होंने छत्तीसगढ़ी भाषा को एक ऐसा नया और कूल अंदाज दिया, जिससे आज का शहरी युवा भी अपनी मातृभाषा में गाने सुनने पर गर्व करने लगा।

कम उम्र में विदाई और संगीत जगत को बड़ा झटका

एप्पी राजा का जाना छत्तीसगढ़ के कला जगत के लिए किसी बड़े झटके से कम नहीं था। जब उनका करियर सातवें आसमान पर था और लोग उनके नए गानों का इंतज़ार कर रहे थे, तभी खराब स्वास्थ्य ने उन्हें घेर लिया। फेफड़ों और सांस से जुड़ी गंभीर बीमारी के चलते उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। डॉक्टरों की तमाम कोशिशों के बाद भी, बेहद कम उम्र में इस उभरते हुए सितारे की सांसें थम गईं। उन्होंने साबित किया कि अगर हुनर हो, तो छोटे कस्बे से निकलकर भी पूरे प्रदेश के दिलों पर राज किया जा सकता है।